शिक्षाघर/प्रहर पाठशाला कार्यक्रम (वैकल्पिक शिक्षा)

शिक्षक–प्रशिक्षण माडयूल

पहला दिन

भोजनपूर्व सत्र

विषय : *संख्या खेल*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों की झिझक तोड़ना एवं सीखने–सिखाने का माहौल तैयार करना।
- प्रेरक (प्रशिक्षक) एवं प्रतिभागियों के बीच की दूरी को कम करना।
- प्रतिभागियों (प्रशिक्षकों) को इस खेल की प्रक्रिया एवं इसकी महत्ता (प्रभाव) से अवगत कराना।

सामग्री :

- कागज के छोटे–छोटे टुकड़े।

विधि :

- प्रतिभागियों की संख्या के बराबर कागज के टुकड़ों पर संख्या को लिख लें। प्रत्येक कागज के टुकड़े को मोड़ कर समूह के बीच में रख दें तथा सभी प्रतिभागियों को संख्या अंकित कागज का एक–एक टुकड़ा लेने के लिए आमंत्रित करें।
- सभी प्रतिभागी गोलाई में खड़े हों।
- खेल संचालक (प्रशिक्षक) कोई दो नम्बर पुकारेंगे, तो उनसे नजर बचाते हुए उन दो संख्याओं (नम्बर) के प्रतिभागी आपस में इशारा करेंगे एवं अपना–अपना स्थान परिवर्तन करेंगे।

निर्देश :

- ☞ खेल संचालक दो प्रतिभागियों का नम्बर पुकारने के बाद समूह में चारों ओर घूमते रहें, ताकि जिनका नम्बर पुकारा गया है वे उनसे बचकर दूसरे साथी को इशारा कर सकें।
- ☞ इशारा उपरान्त स्थान परिवर्तन के क्रम में खेल संचालक यदि दोनों में से किसी एक के स्थान पर खड़ा हो जाता है तो स्थान खोने वाले प्रतिभागी द्वारा आगे का खेल संचालित किया जाएगा, अन्यथा पूर्व के संचालक द्वारा ही खेल जारी रखा जाएगा।
- ☞ यदि खेल संचालक तीन बार में किसी प्रतिभागी के स्थान को नहीं ले पाया तो उसे समूह द्वारा निर्धारित कार्य (दण्ड) जैसे – गाना, नाचना, चुटकले सुनाना आदि करना होगा।
- ☞ प्रशिक्षक/प्रेरक अवश्य ही प्रतिभागियों के साथ यह खेल खेलें।
- ☞ खेल के उपरान्त प्रतिभागियों को अपने–अपने स्थान पर बैठने को कहें एवं खेल पर चर्चा करें।

निष्कर्ष :

- झिझक टूटना।
- माहौल सहज बनना।
- एक दूसरे का स्थान परिवर्तन।
- प्रशिक्षक/प्रेरक के बीच संपर्क स्थापित होना।

विषय : *परिचय (प्रथम चरण)*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों एवं प्रशिक्षकों की दूरी को कम कराना।
- प्रतिभागियों को खुलने का मौका देना।

विधि – 1 :

- गोलाकार आकृति में बैठे प्रतिभागियों को बारी–बारी से अपना नाम एवं गांव का नाम बताने को कहें।
- प्रशिक्षक खुद अपने परिचय से इस प्रकिया की शुरूआत कर सकता है।

विधि – 2 :

- परिचय के इस विधि में सर्वप्रथम प्रशिक्षक अपना नाम बताये और अपने नाम के शुरू के अक्षर से एक खाने की वस्तु का नाम बताये।
- उदाहरण स्वरूप यदि प्रशिक्षक का नाम प्रभात है तो प्रशिक्षक अपना नाम बताने के कम में कहेगा प्रभात–पपीता या प से शुरू होने वाले किसी अन्य खाने की वस्तु का नाम।
- इस प्रकार सभी प्रतिभागियों को अपना नाम एवं नाम के शुरू के अक्षर से खाने की किसी एक वस्तु का नाम जोड़कर बताने को कहें।

विधि – 3 :

- परिचय की इस विधि में प्रशिक्षक सर्वप्रथम अपना नाम बताये।
- इसके उपरान्त प्रशिक्षक के दायीं अथवा बायीं ओर का प्रतिभागी पहले प्रशिक्षक का नाम तब अपना बोले।
- इस प्रकार उससे अगला प्रतिभागी पहले प्रशिक्षक का नाम बोले, फिर अपने से पहले प्रतिभागी का नाम बोले, फिर अपना नाम बोले।
- इस प्रकिया में यदि बाद के प्रतिभागियों द्वारा अपना नाम बोलते समय किसी प्रतिभागी का नाम याद न रहे। तो उसकी मदद वह प्रतिभागी अपना नाम बता कर कर सकता है और परिचय की गतिविधि को जारी रखा जा सकता है।

नोट : उपरोक्त तीनों विधियों में से किसी एक अथवा दो विधियों को प्रशिक्षक परिचय के प्रथम चरण में प्रयोग कर सकते हैं।

विषय : *परिचय (द्वितीय चरण)*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को एक दूसरे से अच्छी तरह जान–पहचान कराना।
- प्रतिभागी एवं प्रशिक्षक की दूरी को कम करना।
- प्रतिभागियों को बोलने एवं खुलने का मौका देना।

सामग्री :

- विभिन्न चित्र बने 4”x4” आकार के हार्ड पेपर के कार्ड। ये कार्ड प्रतिभागियों की जितनी संख्या हो उसकी आधी संख्या में होनी चाहिए। प्रत्येक कार्ड को दो भाग में काट दिया जाना चाहिए।

विधि :

- सभी टुकड़ों को अच्छी तरह मिला कर प्रतिभागियों को एक–एक टुकड़ा उठाने के लिए आमंत्रित करें।
- प्रतिभागियों को टुकड़ों को मिलाने को कहें एवं उस आधार पर प्रतिभागियों को जोड़े में विभक्त करें।
- प्रतिभागियों को 15 मिनट का समय परिचय के लिए दें। जिसमें एक दूसरे के विषय में निम्नलिखित बातें जानने को कहें।

    1. नाम
    2. पता
    3. परिवार के सम्बंध में
    4. शैक्षणिक योग्यता
    5. शौक
    6. कार्य अनुभव

- 15 मिनट उपरान्त बड़े समूह में प्रत्येक जोड़े एक दूसरे के परिचय में उपरोक्त बातें बतायें।

निष्कर्ष :

- प्रतिभागी एक दूसरे को नजदीक से जानेंगे।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *डी.पी.ई.पी. एवं प्रशिक्षण पर संक्षेपण*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को डी.पी.ई.पी. की जानकारी देना।
- डी.पी.ई.पी. के अंर्तगत वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रम से प्रतिभागियों को अवगत कराना।

विधि :

- बड़े समूह में उपरोक्त विषय पर संक्षेप में चर्चा करें एवं महत्वपूर्ण बिन्दुओं को श्यामपट पर लिखें।

विषय : *प्रतिवेदन (रिपोर्ट) लेखन*

उद्देश्य :

- प्रतिवेदन लिखने की दक्षता प्रतिभागियों में पैदा करना।
- प्रतिभागियों की लिखावट, मात्रा दोष, अशुद्धियों में सुधार लाना।
- प्रत्येक दिन के क्रिया–कलाप की पुनरावृति कराना।
- प्रशिक्षण के उपरान्त प्रतिभागियों को उनकी लिखी रिपोर्ट उपलब्ध कराना ताकि वे उनका प्रयोग अपने कार्यक्षेत्र में कर सकें।

विधि :

- दिन–भर के सत्र को भोजनपूर्व एवं भोजनोपरान्त सत्र में बांटे।
- भोजनपूर्व एवं भोजनोपरान्त सत्र के प्रतिवेदन लेखन के लिए एक–एक प्रतिभागी का नाम आमंत्रित करें।
- प्रतिभागियों को अपना नाम स्वेच्छा से देने को कहें।
- चयनित प्रतिभागियों को बतायें कि एक प्रतिभागी को भोजनपूर्व सत्र का एवं दूसरे प्रतिभागी को भोजनोपरान्त सत्र का प्रतिवेदन लिखना है।
- चयनित प्रतिभागियों को बतायें कि उन्हें उनके द्वारा लिखा गया प्रतिवेदन दूसरे दिन सत्र की शुरूआत में पढ़कर समूह में सुनाना है।

- प्रतिभागियों का नाम प्रशिक्षक नोट कर लें।
- प्रतिवेदन में प्रत्येक गतिविधि के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित बातें आनी चाहिए।

  - विषय वस्तु (क्या)
  - प्रक्रिया (कैसे)
  - परिणाम (क्यों)

नोट : प्रत्येक दिन नये प्रतिभागियों को प्रतिवेदन लिखने के लिए आमंत्रित करें जिससे कि पूरे प्रशिक्षण सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रतिवेदन लिखने का मौका मिल सके।

विषय : *मिजाजोमीटर*

उद्देश्य :

- दिनभर की गतिविधियों का पुनरावलोकन करना।
- प्रतिभागियों का पूरे दिन की गतिविधियों के प्रति प्रतिक्रिया को जांचना।
- प्रशिक्षण प्रक्रिया में कम भागीदारी करने वाले प्रतिभागियों का पता लगाकर उनकी मदद करना।

विधि : एक बड़े चार्ट पेपर मे निम्नलिखित तालिका बना लें।

कोड		**दिनांक**					
		--1999	--1999	--1999	--1999	--1999	
5	बहुत अच्छा						
4	अच्छा						
3	साधारण						
2	खराब						
1	बहुत खराब						

- इस चार्ट को प्रशिक्षण कक्ष में टांग दें।
- सत्र की समाप्ति पर पूरे दिन की गतिविधियों के क्रमानुसार प्रतिभागियों के माध्यम से पुनरावृति करवायें।

- पुनरावृति के उपरान्त सभी प्रतिभागियों को एक–एक कागज का टुकड़ा दें और उनसे कहें कि उन्हें दिनभर का प्रशिक्षण कैसा लगा उसे निम्नलिखित कोड का प्रयोग करते हुए काजग के टुकड़े पर अंकित करें। बहुत खराब के लिए (1) कोड, खराब के लिए (2) कोड, साधारण के लिए (3) कोड, अच्छा के लिए (4) कोड एवं बहुत अच्छा के लिए (5) कोड।
- प्रतिभागियों को कहें कि वे अपने अनुभव के आधार पर आंकलन करें, दूसरे की नकल न करें।
- प्रत्येक प्रतिभागी से कागज वापस ले लें।
- प्रत्येक कोड के लिए प्राप्त प्रतिभागियों की संख्या का योग चार्ट पेपर पर अंकित कर दें।

नोट : मिजाजोमीटर की प्रक्रिया प्रत्येक दिन अपनायी जाये।

दूसरा दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत

विषय : *प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण*

उद्‌देश्य :

- विगत दिन के क्रिया कलापों को पुनः याद कराना।
- प्रतिभागी (प्रतिवेदन प्रस्तुतकर्ता) को प्रतिवेदन लेखन में दक्ष बनाना।
- भाषा की अशुद्धियों को दूर करना।

विधि :

- विगत दिन भोजनपूर्व सत्र के प्रतिवेदन लेखन के लिए चयनित प्रतिभागी को प्रतिवेदन पढ़ कर सुनाने को कहें।
- प्रतिवेदन प्रस्तुति के बाद प्रतिवेदन की अच्छाइयों एवं कमजोरियों पर समूह में चर्चा करें। अन्य प्रतिभागियों को प्रतिवेदन पर अपने विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रतिवेदन पर चर्चा की दिशा पर नियंत्रण रखें ताकि प्रतिवेदन प्रस्तुतकर्ता को सकारात्मक मदद मिल सके और अपने प्रतिवेदन में वांछित सुधार कर सकें।
- इसी प्रकार भोजनोपरान्त सत्र के प्रतिवेदन का प्रस्तुतिकरण एवं चर्चा करवायें।
- प्रतिवेदन प्रस्तुति एवं सुधार सुझाव के बाद दोनों प्रतिभागी के प्रतिवेदन को प्रशिक्षक अपने पास रख लें और भाषा अशुद्धियों की जांच करें, यथा – मात्रा, संयुक्ताक्षर, वाक्य आदि।

निर्देश :

- ☞ प्रतिवेदन के मजबूत पक्ष या अच्छी बातों की अवश्य सराहना करें और प्रस्तुतकर्ता को प्रोत्साहित करें।
- ☞ प्रशिक्षक प्रतिवेदन की जांच कर उन प्रतिभागियों से रात्रि/संध्या के सत्र में मिलें और उनकी अशुद्धियों से उन्हें अवगत करायें एवं इसमें सुधार हेतु उन्हें प्रोत्साहित/मदद करें।
- ☞ दोनों सत्र के प्रतिवेदन के प्रस्तुतिकरण के उपरान्त आज के प्रतिवेदन लेखन हेतु नये दो प्रतिभागियों का नाम आमंत्रित करें। (यह प्रक्रिया प्रत्येक दिन अपनाई जाए)

विषय : *नजरी-नक्शा*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को अपने गांवों एवं टोलों की वास्तविक स्थिति की जानकारी कराना।
- गांवो की समस्यायें विशेष रूप से शैक्षिक समस्याओं के प्रति सवेंदनशीलता जागृत करना।

विधि :

- सभी प्रतिभागियों को एक–एक चार्ट–पेपर एवं रंगीन स्केच पेन उपलब्ध करायें।
- सभी प्रतिभागियों से अपने–अपने गांव का नक्शा बनाने को कहें।
- प्रतिभागियों को स्पप्ट करके बतायें कि नजरी–नक्शा क्या होता है और कैसे बनाया जाता है।
- प्रत्येक प्रतिभागी को उनके गांव में यदि विद्यायल उपलब्ध है तो उसे केन्द्र बिन्दु मानकर नक्शा बनाने को कहें यदि विद्यालय नहीं हैं तो गांव के किसी सार्वजनिक स्थल यथा – पंचायत भवन, सार्वजनिक बैठक स्थल आदि को केन्द्र बिन्दु मानकर नक्शा बनाने को कहें।
- नजरी–नक्शा में गांव के स्वास्थ्य केन्द्र, शिक्षा केन्द्र मन्दिर/मस्जिद, विभिन्न टोलों (जातिवार यदि हो तो) नदी, तालाब, जंगल, गांव में पढ़ने योग्य (6-14 आयु वर्ग) बच्चों की अनुमानित संख्या आदि को दिखाने को कहें।
- नजरी–नक्शा के निर्माण हेतु 60 से 90 मिनट का समय निर्धारित करें।
- नजरी–नक्शा बनने के बाद उनका प्रस्तुतिकरण करवायें।
- सभी नक्शों का प्रस्तुतिकरण न करवा कर प्रशिक्षक कुछ (5-7) नक्शों का चयन कर उन्हें प्रस्तुत करवायें।

- प्रस्तुतिकरण पर समूह में विस्तृत चर्चा की जाए।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *गोली अभ्यास*

उद्देश्य :

- सामाजिक संरचना से अवगत कराना।
- समाज के विभिन्न वर्गो (उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्ग) के बीच स्थिति अन्तर के कारणों से अवगत कराना।
- वर्तमान सामाजिक संरचाना का एक प्रमुख कारण अशिक्षा है से प्रतिभागियों को अवगत कराना।
- समाज के निम्न वर्ग की वास्तविक स्थिति के प्रति संदवेदनशील बनाना।

सामग्री :

- 200 कांच की गोलियां।
- तीन गोल लकड़ी के स्ट्राइकर (4”, 2.5” एवं 1.5” व्यास का)।

विधि :

- प्रतिभागियों को तीन छोटे समूहों में इस प्रकार विभक्त करें कि समूह–1 में 6 प्रतिभागी समूह–2 में 12 एवं समूह–3 में शेष 17 प्रतिभागी हों (यदि प्रतिभागियों की संख्या 25 है) यदि प्रतिभागियों की संख्या 25 से कम या अधिक हो तो उपरोक्त अनुपात में प्रतिभागियों को विभक्त करें।
- प्रशिक्षण कक्ष के जमीन पर 2.5 या 3 फीट व्यास का एक गोला चाक से बनायें। उस गोले से 4 फीट, 8 फीट एवं 12 फीट की दूरी पर एक–एक लाईन खींच लें।
- श्याम पट्ट पर निम्नलिखित तालिका बना लें –

	समूह – 1	समूह – 2	समूह – 3
प्रथम पारी			
दूसरी पारी			
तीसरी पारी			

- अब समूह–1 को गोले से 4 फीट की दूरी पर खींची गई लाइन के पास खड़ा कर दें। समूह दो को 8 फीट की दूरी पर खीची गई लाइन पर एवं समूह तीन को 12 फीट की दूरी पर खीची गई लाइन पर खड़ा कर दें। तीनों समूह को अपना–अपना नेता चुनने को कहें।
- प्रतिभागियों को बतायें कि यह अभ्यास तीन पारी तक खेला जाएगा।
- अब प्रशिक्षक/प्रेरक प्रथम समूह को सबसे बड़ा स्ट्राइकर, दूसरे समूह को उससे छोटा एवं तीसरे समूह को सबसे छोटा स्ट्राइकर दे दें।
- अब प्रथम समूह को अपने स्ट्राइकर की मदद से गोली निकालने को कहें। प्रत्येक सदस्य के द्वारा गोले से बाहर निकाली गयी गोलियों को नेता द्वारा एकत्रित कर अपने पास रखने को कहें।
- प्रथम समूह द्वारा निर्धारित स्ट्राइकर (चांस) मारने के बाद क्रमशः दूसरे एवं तीसरे समूह को भी स्ट्राइकर मारने को कहें।
- एक बार जब सभी समूह के सदस्यों द्वारा स्ट्राईकर मार लिया जाए तो प्रत्येक समूह के नेता को उनके समूह के द्वारा जीती गई गोली की संख्या बताने को कहें। इसे श्यामपट्ट पर बने तालिका में अंकित कर दें।
- प्रथम पारी खत्म होने के बाद सभी गोलियों को पुनः गोले के अंदर रखकर दूसरी पारी शुरू करवायें।
- तीसरी पारी में और अधिक गोली जीतने के लिए रणनीति तैयार करने के लिए 5 मिनट का समय सभी समूह को दें और इस दौरान समूह संख्या 2 एवं 3 में जाकर यह कहें कि ''यह जो हो रहा है क्या ठीक हो रहा है? यदि नहीं तो आप कब तक सहते रहेंगें? आप क्या कर सकते हैं?'' इस तरह समूह–2 और 3 को भी समूह–1 के स्थान से मारने के लिए प्रेरित करें। जब समूह–2 या 3, समूह–1 की जगह से मारने के लिए अड़ जाए, तब अभ्यास वहीं बंद कर दें।
- सभी पारियों के योग को तालिका में लिखें।

- अभ्यास समाप्ति पर निम्नलिखित प्रश्न प्रत्येक समूह को दें एवं उनसे कहें कि इन प्रश्नों पर चर्चा कर इनके उत्तर दें। चर्चा के लिए 15 मिनट का समय दें।

  - ग्रुप संख्या–1 कैसे अमीर बन गया।
  - यदि ग्रुप संख्या–1 को 3 के स्थान पर या ग्रुप संख्या 3 को 1 के स्थान पर सभी सुविधाओं के साथ परिवर्तित कर दिया जाए तो स्थिति में कुछ बदलाव आएगा क्या?

- आप अपने समूह को इस अभ्यास के दौरान समाज के किस वर्ग में पाते हैं?
- इस अभ्यास के साथ समाज का कोई संबंध है या नहीं?
- इस अभ्यास में धनी और गरीब के बीच अन्तर कैसे आया।
- क्या इस अभ्यास में ''गोली'' जीतने वाले अपने परिश्रम से ज्यादा गोली जीत पाये।

- चर्चा के उपरान्त सभी समूह अपने–अपने जबाव को प्रस्तुत करें।
- प्रस्तुति एवं अभ्यास को सामाजिक बनावट से जोड़ते हुए विस्तृत चर्चा प्रतिभागियों से करें।

विषय : *समाज की विभिन्न विशेषतायें*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को समाज के मूल विशेषताओं पर ध्यान दिलाना।
- समाज के विभिन्न पहलुओं पर संवेदनशील बनाना।

विधि :

- इस विषय पर बड़े समूह चर्चा करायें जिससे प्रतिभागी अपने–अपने विचारों को सामने रख सकें।
- उभरे बिन्दुओं को श्यामपट पर लिखें और यदि कोई बिन्दु स्पप्ट न हो तो उसे स्पप्ट करें।

निर्देश :

☞ इस चर्चा को इस ढंग से करायी जानी चाहिए कि माहौल शांत और आनन्ददायक हो। चर्चा से आ रहे बिन्दुओं को क्रमबद्धता के आधार पर लिखना जरूरी नहीं है, जैसे – जैसे बिन्दु आते रहे वैसे – वैसे लिखते जाएं अन्यथा स्वतंत्रता के अभव में महत्वपूर्ण बिन्दु नहीं निकल पायेंगे।

निप्कर्ष :

- विभिन्न सम्प्रदाय के लोग रहते हैं।
- एक निश्चित नियम के तहत लोग रहते हैं।
- परस्पर सहयोग एवं सामन्जस्य होता है।
- अन्तर्मुखी प्रतिभा होती है।
- स्वभाव/स्तर/पेशा/जीवन शैली/संगठन/संस्थांए आदि में भिन्नताएं होती हैं।

⇒ **रात्रि कार्य – अपने गांव का विवरण एवं विशेषतायें संक्षेप में लिखें। (नजरी नक्शा के आलोक में)**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजो मीटर**

तीसरा दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण

विषय : *रात्रि कार्य पर चर्चा*

विधि :

- कुछ प्रतिभागियों को उनके रात्रि कार्य को पढ़ कर सुनाने को कहें।
- विषय पर संक्षिप्त चर्चा करें।
- प्रत्येक प्रतिभागी के रात्रि कार्य को जमा करा लें।
- प्रशिक्षक रात्रि कार्य की जांच करें और भाषा की अशुद्धियों से प्रतिभागी को अवगत करायें। अथवा प्रतिभागी आपस में रात्रि कार्य के विषय पर लिखे कागज की अदला–बदली कर लें और एक दूसरे की अशुद्धियों की जांच करें।
- यह प्रक्रिया प्रत्येक दिन रात्रि सत्र में चर्चा के दौरान अपनायी जाये।

विषय : *शिक्षा क्या? और क्यों?*

उद्देश्य :

- शिक्षा क्या है? पर प्रतिभागियों की समझ स्पप्ट करना।
- शिक्षा से लाभ पर प्रतिभागियों की समझ विकसित करना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा।

निर्देश :

☞ जो भी बिन्दु समूह से उभर कर आए उसे श्यामपट्ट पर अंकित करे। प्रतिभागियों के बोले बिन्दुओं को न काटें। प्रशिक्षक/प्रेरक को चाहिए कि चर्चा के क्रम में बिन्दुओं को समूह से ही निकलवाएं तथा अपनी ओर से ज्यादा न बोले।

निष्कर्ष :

- ज्ञानार्जन के लिए।
- जीवकोपार्जन के लिए।
- जीवन स्तर को ऊॅचा उठाने के लिए।
- आत्मविश्वास/आत्मसम्मान में वृद्धि।
- सरकारी विकास योजनाओं का लाभ उठाने में सक्षम।
- शोषण मुक्त समाज के निर्माण के लिए आदि।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *समाज का शिक्षा के प्रति सोच*

उद्देश्य :

- समाज के विभिन्न वर्गो की शिक्षा के प्रति सोच से प्रतिभागियों को अवगत कराना।
- प्रतिभागियों को अभिनय का मौका देकर उन्हें और खोलना।
- शिक्षा के प्रति खुद की सोच एवं समाज की सोच के बीच के अन्तर को समझना।

विधि :

- बड़े समूह को चार छोटे समूह में विभक्त करें।
- समूह–1 को **''नौकरी पेशा परिवार का शिक्षा के प्रति सोच''**, समूह–2 को **''गरीब किसान परिवार का शिक्षा के प्रति सोच''**, समूह–3 को **''व्यापारी (साहूकार) परिवार का शिक्षा के प्रति सोच''**, समूह–4 को **''वंचित वर्ग का शिक्षा के प्रति सोच''** विषय पर चर्चा करने को कहें।
- चर्चा के लिए 45 मिनट का समय निर्धारित करें।
- चर्चा उपरान्त समूह में उभरे बिन्दुओं को प्रत्येक समूह द्वारा चार्ट पेपर पर लिखने को कहें।

- इसके उपरान्त प्रत्येक समूह को उनके द्वारा चर्चा से उभरे बिन्दुओं के आधार पर एक नाटक तैयार कर प्रस्तुत करने को कहें।
- नाटक की तैयारी के लिए 30 मिनट एवं इसके प्रस्तुति के लिए प्रत्येक समूह का 10 मिनट का समय निर्धारित करें।
- प्रत्येक समूह द्वारा नाटक का प्रस्तुतिकरण करवायें।
- जब एक समूह अपना नाटक प्रस्तुत कर रहा हो तो दूसरे समूहों को नाटक को ध्यान से देखने को कहें।
- सभी समूहों द्वारा नाटक के प्रस्तुतिकरण के बाद निम्नलिखित अभ्यास करवायें –

    - प्रत्येक समूह से एक–एक सदस्य को आमंत्रित करें।
    - उन्हें प्रशिक्षण कक्ष के बीच में गोलाकार आकृति में बैठने को कहें। उन्हें इस प्रकार से गोलाकार आकृति में बैठायें कि पांचवे प्रतिभागी के बैठने की जगह खाली हो।
    - अब इन चार लोगों के समूह के बीच यह सवाल रखें कि ''प्रस्तुत अभिनय (नाटकों) को वास्तविक जीवन से जोड़ा जा सकता है?'' वास्तविकता क्या है?
    - अन्य प्रतिभागियों को स्पप्ट कर दें कि अगर इस चर्चा में वे कुछ जोड़ना चाहते हैं तो बारी–बारी आकर पांचवे खाली स्थान पर बैठकर अपनी बात रख सकते हैं अन्यथा बाहर से मंतव्य देना मना है। अपनी बात कहने के बाद प्रतिभागी को समूह से स्थान रिक्त कर अपने पूर्व के स्थान पर बैठ जाना होगा।

- इस अभ्यास से उभरे बिन्दुओं को निम्नलिखित बिन्दुओं से जोड़ते हुए प्रतिभागियों के बीच चर्चा करें –

    - शिक्षा क्या, क्यों विषय पर हुई चर्चा में उभरे बिन्दुओं एवं रोल–प्ले में उभरे बिन्दुओं में क्या कोई फर्क है यदि हां तो क्यों?
    - क्या इस फर्क को कम किया जा सकता है यदि हां तो कैसे?
    - हमारी सोच एवं समाज की शिक्षा के प्रति सोच को कैसे एक बनाया जा सकता है।

⇒ **रात्रि कार्य – क्या अभिवंचितों के लिए शिक्षा जरूरी है? अगर हां तो क्यों?**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

चौथा दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदन
⇒ रात्रि कार्य पर चर्चा

विषय : *बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने में आने वाली बाधायें/दिक्कतें।*

उद्देश्य :

- बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने में कौन–कौन सी बाधायें हैं, इसकी समझ प्रतिभागियों में विकसित करना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा।
- प्रत्येक प्रतिभागियों को प्राथमिक शिक्षा की एक–एक बाधायें बताने को कहें।
- प्रतिभागियों द्वारा बताये गए बिन्दुओं को श्यामपट पर लिखें।
- चर्चा के अन्त में जितने भी बिन्दु आए उन्हें मुख्य रूप से तीन भागों में विभक्त कर दें।
- बच्चों से सम्बंधित, शिक्षक से सम्बंधित और अभिभावक/समुदाय से सम्बंधित।

निष्कर्ष :

- विद्यालय में भय का वातावरण।
- बच्चों का कामकाजी होना।
- विद्यालय का दूर होना।

विषय : *वैकल्पिक शिक्षा क्या, क्यों और किसके लिए ?*

उद्देश्य :

- वैकल्पिक शिक्षा की समझ प्रतिभागियों में विकसित करना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा।

निर्देश :

☞ चर्चा के क्रम में यह ध्यान रखें कि प्रत्येक प्रतिभागी इस विषय पर अपना विचार रखे।
☞ चर्चा से उभरे बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखें।
☞ अन्त में चर्चा को डीब्रीफ करें एवं वैकल्पिक शिक्षा क्या? क्यों, किसके लिए? को पूर्ण जानकारी प्रतिभागियों को दें।

निष्कर्ष :

- बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना।
- सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वैकल्पिक शिक्षा।
- ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें आदर्श विद्यालय के गुण विद्यमान हो।
- कामकाजी बच्चों को श्रम के शोषण से बाहर निकालने के लिए आदि।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र के अनुदेशकों की भूमिका*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को उनके विभिन्न भूमिकाओं से अवगत कराना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा।
- प्रतिभागियों के बीच इस बिन्दु पर चर्चा करें कि जब वे अनुदेशक के रूप में अपने गांव में काम करते है/करेंगे तो उन्हें कितने प्रकार की भूमिकाओं को निभाना पड़ता है/पड़ेगा ?

- सभी प्रतिभागियों को बारी–बारी से बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- चर्चा के क्रम में आने वाले महत्वपूर्ण बिन्दुओं को श्यामपट पर लिखें।

निष्कर्ष :

- अभिभावक की भूमिका
- शिक्षक की भूमिका
- सलाहकार की भूमिका
- विशलेषक की भूमिका
- प्रतिवेदक की भूमिका
- सम्पर्ककर्ता की भूमिका आदि

विषय : *वैकल्पिक विघालयों के अनुदेशकों के गुण*

उद्देश्य :

- वैकल्पिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य हेतु शिक्षकों में अपेक्षित गुणों/क्षमता से प्रतिभागियों को अवगत कराना।
- मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना।

विधि :

- प्रतिभागियों को चार या पॉच छोटे समूह में विभक्त कर उपरोक्त विषय पर समूह चर्चा करवायें।

निर्देश :

☞ शिक्षक के गुणों पर प्रत्येक समूह को चर्चा करने को कहें।
☞ चर्चा के लिए 45 मिनट का समय निर्धारित करें।
☞ समूह चर्चा के दौरान यह ध्यान रखे कि प्रत्येक समूह के सदस्य समूह चर्चा में भाग ले रहे है अथवा नही।
☞ आवश्यकतानुसार समूह का मार्गदर्शन करें।
☞ समूह चर्चा के उपरान्त प्रत्येक समूह से प्रस्तुति करवायें।

☞ प्रस्तुतिकरण के उपरान्त डीब्रीफिंग (चर्चा से उभरे बिन्दुओं को बांधना / जोड़ना) करें।

निष्कर्ष :

सहनशील	अभिनेता
चरित्रवान	कतर्व्यनिष्ठ
ईमानदार	बच्चों से प्यार करने वाला
अच्छा वक्ता	गायक आदि

⇒ **रात्रि कार्य – प्रत्येक प्रतिभागी दूसरे किसी भी प्रतिभागी से खुद (स्वयं) के बारे में जानने का प्रयत्न करें। (फीडबैक देने वाला प्रतिभागी सकारात्मक / मददगार फीडबैक दें)**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

पांचवॉ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ **गीत**
⇒ **प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं प्रतिवेदक का चुनाव**

विषय : *मैं कौन हूं?*

उद्देश्य :

- विभिन्न भूमिकाओं के निर्वाह के लिए स्वयं की पहचान करना।
- स्वयं को समझना।
- प्रतिभागियों को खोलना।

विधि : प्रथम चरण

- सभी प्रतिभागियों को अपनी कापी के एक पन्ने पर स्वयं के बारे में अर्थात "मैं कौन हूं" के विषय पर लिखने को कहें।
- कार्य के लिए 45 मिनट का समय निर्धारित करें।
- प्रतिभागियों को कहें कि वे अपने बारे में लिखें जैसे – क्या नाम है? कहां रहता है? कैसे परिवार में उसका भरण–पोषण हुआ? कितनी शिक्षा पायी? स्वभाव कैसा है? समूह में खुद को कैसा महसूस करता है, आदि? साथ ही प्रतिभागियों को अपने दो गुणों और दो अवगुणों को भी लिखने को कहें।
- प्रतिभागियों को गम्भीरता पूर्वक उपरोक्त बातों को लिखने को कहें। दूसरों की न नकल करें।

द्वितीय चरण

- प्रतिभागियों को जोड़ियों में विभक्त करें।
- जोड़ी के निर्माण में यह ध्यान रखें कि जिस प्रतिभागी के बीच ज्यादा घनिप्ठता है उनकी जोड़ी बनायें।
- प्रत्येक जोड़ी को 45 मिनट का समय दें और उनसे कहें कि वे एक दूसरे को ''मैं कौन हूं'' विषय पर लिखा गया पन्ना दिखायें और उस पर चर्चा करें। एक दूसरे के विषय में अन्य महत्वपूर्ण बाते जिसकी चर्चा लिखित रूप में नहीं हैं पर आपस में बात करें। एक–दूसरे को उसके गुण एवं अवगुण से अवगत करायें एव अवगुणों को दूर करने के उपाय ढूंढे और अवगुणों को दूर करने में एक दूसरे की मदद करें।

निर्देश :

☞ प्रशिक्षक यदि महसूस करें कि उपरोक्त कार्य के लिए और अधिक समय की आवश्यकता है तो समय का पुर्ननिर्धारण कर सकते हैं।

विषय : *कड़ी अभ्यास*

उद्देश्य :

- सहयोग की भावना विकसित करना।
- अपने सहयोगी को अवसर देने की जिम्मेदारी का अहसास कराना।
- यदि लक्ष्य स्पप्ट हो तो अनेक व्यवधानों के बावजूद भी लक्ष्य प्राप्ति संभव है का अहसास कराना।

सामग्री :

- पुराने अखबार
- गोंद
- पन्द्रह (15) कपड़े के टुकड़े (हाथ एवं आंख बांधने हेतु)

विधि :

(क) प्रतिभागी से सम्बंधित

- सभी प्रतिभागियों को पांच समूहों में विभक्त करें। यह ध्यान रखे कि सभी समूहों में सदस्यों की संख्या बराबर हो।
- सभी समूहों को प्रशिक्षण कक्ष में अलग–अलग जगहों पर गोलाई में बैठा दें।
- सभी समूहों को यह निर्देश दें कि 10 मिनट में कम से कम 100 कागज की कड़ियों का निर्माण करना है। इस कार्य को करने के लिए रणनीति तैयार करने हेतु 5 मिनट का समय सभी समूहों को दें।
- इसके उपरान्त सभी समूहों को एक साथ कागज एवं गोंद उपलब्ध करायें और एक साथ कड़ी निर्माण का कार्य शुरू करने को कहें।

(ख) अवलोकन कर्ता से सम्बंधित

- पांचों समूह के लिए एक–एक अवलोकन कर्ता का चयन कर लें तथा कौन किस समूह का अवलोकन करेंगे यह स्पप्ट कर दें। (यदि आवश्यक हो तो प्रतिभागियों में से एक या दो को अवलोकनकर्ता बना सकते हैं)
- प्रत्येक अवलोकनकर्ताओं को प्रतिभागियों की आंख बांधने के लिए एक एवं हाथ बांधने के लिए दो कपड़े का टुकड़ा उपलब्ध करायें। इन कपड़ों को अवलोकनकर्ता प्रतिभागियों के नजर से छिपा कर रखें।
- अवलोकन कर्ताओं को प्रशिक्षण कक्ष से बाहर ले जाकर निम्नलिखित बातें स्पप्ट कर दें।

  - ❑ प्रेरक द्वारा, दो मिनट बाद संकेत मिलने पर समूह में तेजी से कार्य कर रहे सदस्यों में से एक की आंख बांध दें।
  - ❑ पुनः दो मिनट बाद प्रेरक से संकेत मिलने पर समूह में तेजी से कार्य कर रहे अन्य दो सदस्यों का हाथ पीछे करके बांध दें।
  - ❑ समूह में जरूरत पड़ने पर, समय–समय पर गोंद/कागज की पूर्ति करें।
  - ❑ समूह की प्रत्येक गतिविधियों का बारीकी से अवलोकन करें।

- अभ्यास के उपरान्त निम्नलिखित प्रश्न पूछें।

1. सर्वप्रथम आंख बंधे एवं इसके उपरान्त हाथ बंधे–सदस्यों से एक–एक कर निम्न प्रश्न पूंछे –

   - ❑ अभ्यास के दौरान आपको कैसा लगा?

- जब आपके आंख/हाथ बांधे जा रहे थे तब आपकों कैसा लगा?
- आपका ही आंख/हाथ क्यों बांधा गया?
- हाथ/आंख बंधने के बाद क्या आपने समूह को योगदान किया?
- समूह के अन्य लोगों का बर्ताव आपके प्रति कैसा था? आदि।

2. समूह के अन्य सदस्यों से निम्न प्रश्न पूछें –

   - यहां लक्ष्य क्या था? कितना था? कितना हासिल किये? ऐसा क्यों और कैसे हुआ?
   - क्या आप आंख/हाथ बंधें सदस्यों की बात मान रहे थे और उनसे सहयोग ले रहे थे? आदि।

3. अवलोकन कर्ता को अभ्यास के दौरान किये गए अनुभवों को समूह के सामने रखने को कहें।

4. अभ्यास को समाज से जोड़े और चर्चा करे कि कागज किसका प्रतीक था? आंख/हाथ बंधे व्यक्ति किसके प्रतीक थे? हमारा वास्तविक लक्ष्य क्या है? समूह में कार्य करते समय कैसा व्यवहार होना चाहिए आदि।

निष्कर्ष :

- लक्ष्य की प्राप्ति
- दूसरों को अवसर देना
- सहयोगी भावना का विकास
- कार्य विभाजन

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *बोतल अभ्यास*

उद्देश्य :

- पूर्वाग्रह से बाहर आना।
- दिमाग में बैठे अंधविश्वास तथा रूढ़िवाद को निकालना।
- लड़कियों/महिलाओं की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना।

सामग्री :

- तीन बोतल, ऑख बांधने के लिए तीन कपड़े।

विधि :

- प्रतिभागियों में से किन्ही तीन को अभ्यास में भाग लेने के लिए आमंत्रित करें।
- तीनों बोतल को फर्श पर दो–दो फिट की दूरी पर एक सीधी रेखा में रख दें।
- तीनों प्रतिभागियों को बारी–बारी से बोतल फांदने का अभ्यास करने को कहें।
- अब इन तीनों प्रतिभागियों से कहें कि ''आपकी ऑखें बांध दी जाएगी और आपकों बोतल फांदना होगा, ध्यान रहे कि बोतल गिर न जाए। इसलिए आप इसे फांदने का और अभ्यास कर लें।''
- अन्य प्रतिभागियों से पूछें कि बोतल गिरने पर इन्हें क्या दण्ड दिया जायेगा। प्रतिभागियों से एक दण्ड निश्चित करा लें। जैसे – गीत गाना, नृत्य करना आदि।
- तीनों प्रतिभागियों की ऑख बांध दें।
- जब आंखे बांध दी जाए तो तीनों बोतल को वहॉ से हटा दें।
- अभ्यास खत्म होने पर उनकी ऑखे खोल दें।

इसके बाद प्रतिभागियों से निम्न प्रश्न पूछे जाएं –

- आप क्या फांद रहे थे?
- बोतल कहॉ थी?
- आपका दण्ड किसने निश्चित किया?
- आपको कैसा लग रहा था जब अन्य लोग ताली बजा रहे थे?
- क्या आपको सजा का डर था?

- ❑ कितने लोगों को सजा निर्धारित करना खराब लगा?
- ❑ क्या आपने सजा निर्धारण का विरोध किया?
- ❑ क्या इसे हम समाज से जोड़ सकते है?
- ❑ बोतल किसका प्रतीक है?

निर्देश :

☞ अभ्यास के पूर्व अन्य प्रतिभागियों (दर्शक) को स्पप्ट कर दें कि अभ्यास के दौरान वे सिर्फ ताली बजा सकते है परन्तु कुछ बोल नहीं सकते हैं।

सावधानियॉ :

- ऑखों पर पट्टी अच्छी तरह से बांधे।
- बोतल फांदते समय जोर–जोर से शाबाशी दें।
- प्रतिभागियों को फांदने के बाद एक निश्चित दूरी पर बैठा दे।
- जब तक सभी प्रतिभागी बोतल नहीं फांद लेते हैं तब तक किसी की ऑख न खोलें।

नोट : अभ्यास के उपरान्त महत्वपूर्ण बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखे।

निप्कर्ष :

- बोतल अन्धविश्वास का प्रतीक।
- खेल संचालक समाज के दबंग लोगों का प्रतीक।
- दर्शक प्रतिभागी समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतीक।
- महिलाओं को कमजोर एवं कम बुद्धि का समझना।

⇒ **रात्रि कार्य : प्रत्येक प्रतिभागी दूसरे किसी भी प्रतिभागी से खुद (स्वयं) के बारे में जानने का प्रयत्न करें। (फीडबैक देने वाला प्रतिभागी सकारात्मक/मददगार के रूप में फीडबैक दे।)**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

छठा दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ **गीत**
⇒ **प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं प्रतिवेदक का चुनाव**

विषय : *समाज में महिलाओ/बच्चियों की स्थिति*

उद्देश्य :

- समाज में बच्चियों/महिलाओं की वास्तविक स्थिति से अवगत कराना।
- महिलाओं के प्रति सम्मान तथा संवेदनशीलता लाना।
- बच्चियों की शिक्षा के महत्व को समझाना।

विधि :

- छोटे समूहों में चर्चा।
- प्रतिभागियों को 6 छोटे समूहों में विभक्त कर दें।
- इन समूहों को निम्नलिखित विषय पर समूह चर्चा करने को कहें।

समूह – 1 एवं 2	लड़कियों की जन्म से 10 वर्ष की उम्र तक की स्थिति।
समूह – 3 एवं 4	10 वर्ष से विवाह होने तक।
समूह – 5 एवं 6	विवाह से मृत्युपर्यन्त।

निर्देश :

☞ समूह चर्चा के लिए 45 मिनट का समय निर्धारित करें।
☞ प्रत्येक समूह को चर्चा के उपरान्त बिन्दुओं को चार्ट पेपर पर लिखने को कहें।
☞ प्रत्येक समूह को चर्चा का प्रस्तुतिकरण बड़े समूह में करने को कहें।
☞ प्रस्तुतिकरण के बाद चर्चा को डीब्रीफ करें।

विषय : *ज्ञान, मनोवृति और अभ्यास*

उद्‌देश्य :

- विषय वस्तु की तुलना में क्रिया–प्रतिक्रिया का महत्व समझाना।
- ज्ञान को अभ्यास में उतारने की आवश्यकता को बताना।
- करके सीखने के महत्व से परिचित कराना।
- मनोवृति में परिवर्तन क्यों की समझ विकसित करना।

विधि :

- बडे समूह में चर्चा द्वारा।

निर्देश :

☞ प्रशिक्षक/अभिप्रेरक ज्ञान, मनोवृति एवं अभ्यास क्या है? इसकी जानकारी प्रतिभागियों कों दें।
☞ मस्तिप्क से हृदय की प्रक्रिया की जानकारी दें।
☞ विषय वस्तु से महत्वपूर्ण प्रक्रिया क्या है, क्यों है और कैसे हो? की जानकारी दें।
☞ इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की गतिविधियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करें।

प्रतिभागियों के समक्ष क्रिया–प्रतिक्रिया की जानकारी दें तथा इसे बच्चों के निम्नलिखित शिक्षण पद्धतियों से जोड़ें।

- शिक्षक केन्द्रित
- बाल केन्द्रित
- स्वध्याय

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *बच्चे कैसे सीखते हैं?*

- प्रतिभागियों को बच्चों के सीखने की प्रक्रिया की जानकारी देना।

विधि :

- उपरोक्त विषय पर प्रतिभागियों की समझ विकसित करने हेतु गतिविधि की शुरूआत समान्य बातचीत से करे जैसे– आपके गांव में पढ़ने योग्य बच्चे तो होंगे ही। क्या आपके परिवार में पढ़ने वाले बच्चे हैं? क्या आपने कभी उनकी जानकारियों के विषय में गम्भीरता से सोचा है? आदि।
- प्रतिभागियों से कहें कि ''आप गांव के उन बच्चों के बारे में सोंचे, जो 6 से 9 वर्ष के आयु के हैं, और वे क्या काम करना जानते हैं, उन्हें किस प्रकार की जानकारी होती है।
- उपरोक्त प्रश्न को उदाहरण से स्पप्ट करें – जैसे 6 साल के बच्चे को अनेक फलों एवं सब्जियों का नाम, पारिवारिक सम्बंधों (जैसे माता, पिता) के बारे में जानता है, गाय–बकरी चराना आता है आदि।
- अब प्रतिभागियों को अपने–अपने कापी मे उपरोक्त प्रश्न के संबंध में दो प्रकार की सूची बनाने को कहें एक तो यह कि 6 साल का बच्चा क्या करना जानता है या क्या कुछ जानता है, दूसरा 9 साल का बच्चा क्या कुछ करना जानता है या क्या कुछ जानता है।
- इस कार्य के लिए 45 मिनट का समय निर्धारित करें।
- जब ये काम पूरा हो जाए तो सभी प्रशिक्षुओं से कागज एकत्र कर लें। इसके पश्चात 6 साल के बच्चे के कामों की सूचियों को समेकित कर लें। अर्थात प्रत्येक प्रशिक्षु द्वारा कागज पर बनाई गई पहली सूची को श्यमापट पर लिखते जाएं। जहां कहीं सूची में काम का दोहरान हो, उस बिन्दु को न लिखे।

- इसी प्रकार से दूसरी सूची को भी श्यामपट पर समेकित करें और अब दोनों सूचियों के कामों/जानकारियों की संख्या में अन्तर पर बात करें। उदाहरणार्थ

6 साल के बच्चे द्वारा किये जाने वाले कामों की सूची में 40 काम आये 9 साल के बच्चे की सूची में 65 काम आये। अन्तर पर ज्यादा जोर न देकर केवल इस ओर चर्चा को ले जाया जाए कि इतने सारे काम बच्चा कैसे सीखा या सीखता है? किस परिस्थिति में सीखता है?

- चर्चा में इन बातों पर प्रतिभागियों के विचार जाने जाएं कि सीखने के लिए किन–किन परिस्थितियों की आवश्यकता होती है? प्रतिभागियों द्वारा बताई गई परिस्थितियों को भी श्यामपट पर लिखा जाए और पहले सूची में से कुछ उदाहरणों को लेकर उन परिस्थितियों पर बात की जाए।

निप्कर्ष :

- सीखने का खुला वातावरण
- भयमुक्त वातावरण
- अनौपचारिक सीख
- करके सीखना

विषय : *बच्चों की सीखने के सिद्धांत*

उद्‌देश्य :

- बच्चों के सीखने के सिद्धांतों से प्रतिभागियों को अवगत कराना।
- बच्चों को सीखने के क्रम में आने वाली कठनाईयों के प्रति संवेदनशील बनाना।

सिद्धांत :

I) बच्चे सरल से कठिन की ओर सीखते हैं।
II) सीखने का माहौल तैयार किया जाए तो सीख तेजी से होती है।

विधि :

- श्यामापट्‌ट पर एक वर्ग बनाकर प्रतिभागियों को उसे चार बराबर भागों में बांटने के लिए आमंत्रित करें।
- विभाजित वर्ग के चारों भाग क्षेत्रफल एवं आकार दोनों में बराबर होने चाहिए।

- पहले प्रतिभागी अपनी कापी पर प्रयास करें और तब श्यामपट्ट पर आकर वर्ग विभाजित करें।
- इस अभ्यास को बच्चों के सीखने के उपरोक्त दोनों सिद्धांत से जोड़ें और इस पर चर्चा करें।

निर्देश :

☞ प्रतिभागियों को वर्ग विभाजन के लिए प्रोत्साहित करें।

☞ किसी प्रतिभागी द्वारा श्यामपट्ट पर विभाजित वर्ग के सही एवं गलत का निर्धारण अन्य प्रतिभागियों को ही करने को कहें। उनके माध्यम से ही करवायें।

निष्कर्ष :

- लोग सरल से कठिन की ओर जाते हैं।
- सफलता मिलने पर आनन्द एवं अधिक सीखने की इच्छा होती है।
- जिज्ञासा उत्पन्न होती है।
- सृजनशीलता बढ़ती है।

सिद्धांत :

III) सीखने के शुरूआती दौर में अक्षर, शब्द, अंक अथवा संख्या बच्चों के लिए मात्र आकृति होती है।

विधि :

- श्यामपट्ट पर निम्नलिखित आकृति बना दें।

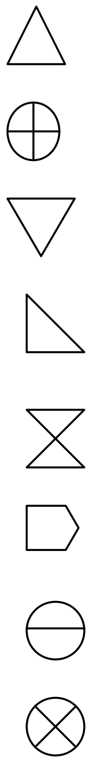

- प्रतिभागियों से पूछें कि बायें ओर की आकृतिओं के आधार पर बताये कि दाहिनी ओर की आकृति क्या है?
- प्रतिभागियों के प्रयास करने के बाद बतायें कि यह 2 एवं 9 है।

निप्कर्प :

- चूंकि 2 एवं 9 की आकृति हमारे दिमाग में विद्यमान है। अतः हम इन आकृतियों ( ) को 2 एवं 9 अंक के रूप में नहीं पहचान पा रहे थे। ठीक इसी प्रकार बच्चे जब प्रथम बार 'क' 'ख' अथवा 3, 4 …… आदि को देखते हैं तो एक आकृति के रूप में देखते हैं न कि अक्षर 'क' एवं अंक 3, 4 के रूप में।

सिद्धान्त :

IV) प्रत्येक बच्चे के सीखने की गति भिन्न होती है।

विधि :

- सभी प्रतिभागियों को एक पृप्ठ कागज उपलब्ध करायें। अब सभी प्रतिभागियों को एक–एक पुस्तक (हिन्दी) अथवा हिन्दी का अखबार उपलब्ध करायें। (यदि एक ही विषय–वस्तु लिखी सामग्री उपलब्ध हो तो ज्यादा बेहतर होगा।)

- प्रतिभागियों से कहें कि आपको उपलब्ध कराये गये पुस्तक या अखबार से एक पृप्ट नकल करके लिखना है। इसके लिए आपके पास 10 मिनट का समय है।
- प्रतिभागियों को यह भी स्पप्ट कर दें कि लिखते समय, इतनी तेज गति से नहीं लिखें कि लिखा हुआ समझ में न आये। साफ–सुथरा लिखें।
- सभी प्रतिभागियों को कागज पर अपना नाम भी लिखने को कहें।
- 10 मिनट के उपरान्त सभी से कागज ले लें।
- अब उनमें से कुछ प्रतिभागियों के कागज को लेकर चर्चा करें कि समय एक ही होने के बावजुद 10 मिनट में किसी ने आधा पृप्ठ लिखा किसी ने पूरा लिखा, किसी ने एक चौथाई लिखा आदि।
- उपरोक्त अभ्यास को बच्चों के सीखने के गति से जोड़े और यह स्पप्ट करें कि जिस प्रकार लगभग एक ही उम्र (6-9) के बच्चे की वृद्धि (लम्बाई, मोटापा आदि) असमान होती है ठीक उसी प्रकार प्रत्येक बच्चे की सिखने की गति भी अलग–अलग होती हैं कोई बच्चा तेजी से सीखता है तो कोई धीमी गति से अतः हमें यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि सभी बच्चे एक साथ एक ही स्तर पर सीखें।

निर्देश :

☞ इसी प्रकार सीखने के अन्य सिद्धांतों यथा – मस्तिप्क एवं हाथ का समन्वय, अनुभवों से सीखना आदि से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

⇒ **रात्रि कार्य : ''लड़कियॉ गिनी नहीं जाती क्योंकि वह गिनना नहीं जानती''। इस मुहावरे का वर्णन करें।**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

सातवॉ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ **गीत**

⇒ **प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं प्रतिवेदक का चुनाव**

विषय : *संचार के सिद्धान्त*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को संचार के महत्व से अवगत कराना।
- प्रभावी सीख में संचार की भूमिका से प्रतिभागियों को अवगत कराना।
- एकतरफा एवं दो तरफा संचार की जानकारी देना।

सामग्री :

- एक बोर्ड
- अलग–अलग प्रकार के सामान के 10 जोड़े जैसे–पेन्सिल, बोतल, गेंद आदि।

विधि :

एक तरफा संप्रेपण

- समूह से दो प्रतिभागियों को अभ्यास में भाग लेने के लिए आमंत्रित करें।
- दोनों को कुछ दूरी पर आमने सामने बैठाकर दोनों के सामने 10-10 सामग्रियां रख दें।
- दोनों के बीच में बाधा के रूप में एक बोर्ड/कपड़ा रख दें ताकि ये दोनों एक दूसरे को देख न सकें।
- प्रेरक एक प्रतिभागी के सामग्रियों को किसी रूप में सजा दें।
- जिस प्रतिभागी के सामने समान सजाया गया है उससे कहें कि बोर्ड के उस पार वाले अपने साथी को सजाये गए समान के ढांचे (रूपरेखा) का वर्णन करें ताकि दूसरा प्रतिभागी उसी प्रकार अपने तरफ के सामानो को सजा सकें।
- कार्य पूर्ण होने पर एक–एक कर दोनों प्रतिभागियों से अनुमानित फल पूछें (10 में से कितना सही हुआ है?)।
- उनके उत्तर को श्यामपट्ट पर लिखें।
- इसके उपरान्त बोर्ड/कपड़ा को हटाकर समूह की सहमति से देखें कि वास्तव में कितना सही है? इसके परिणाम को भी श्यामपट्ट पर अंकित कर दें।

निर्देश :

- ☞ प्रशिक्षक/प्रेरक को यह स्पप्ट कर देना चाहिए कि जो प्रतिभागी अपने साथी के निर्देशानुसार सामन सजा रहा है, उसे कोई प्रश्न पूछने की छूट नहीं है।
- ☞ दर्शक प्रतिभागियों को भी पूरे अभ्यास के दौरान बोलने से मना कर दें।

दो तरफा संप्रेषण

- इस बार पहला प्रतिभागी खुद से अपने सामानो का ढांचा बनायें और उसकी रूपरेखा दूसरे प्रतिभागी को बतायें।
- जिस प्रतिभागी को एक तरफा अभ्यास में चुपचाप सुनकर ढांचा बनाना था। अब वह, बात कर सकता हैं और प्रश्न पूछ सकता हैं।
- अन्त में दोनों प्रतिभागियों से पूछे कि उनके विचार से 10 में से कितने सही है। उनके जवाब को श्यामपट्ट पर अंकित कर दें।
- इसके बाद बाधा को हटाकर समूह की सहमति से देखें की वास्तव में कितना सही है और उसे भी श्यामपट्ट पर अंकित कर दें।

निर्देश :

- ☞ इस अभ्यास में अभिप्रेरक को स्पप्ट कर देना चाहिए कि दोनों प्रतिभागी आपास में बातचीत कर सकते हैं तथा प्रश्न पूछ सकते हैं।
- ☞ यह भी स्पप्ट कर देना चाहिए कि बाहर से कोई भी सहायता या किसी भी तरह की मदद की अनुमति नहीं है।

अभ्यास पर चर्चा :

- अभ्यास पर चर्चा के क्रम में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करें।
  - ❑ आपको पहले अभ्यास के दौरान कैसा अनुभव हुआ?
  - ❑ दो तरफा अभ्यास के दौरान कैसा लगा?
  - ❑ दोनों में से कौन सा बेहतर था?
- अभ्यास को बच्चों के सीखने की प्रक्रिया से जोड़ें।

निप्कर्ष :

- दो तरफा संप्रेषण ज्यादा सफल होता है क्योंकि इसमें सामने वाले को समझने एवं सीखने में आसानी होती है।
- प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता हो तो सीख पक्की एवं तीव्र गति से होती है।

विषय : *विद्यालय वातावरण*

उद्देश्य :

- बच्चों की सीखने में विद्यालय वातावरण के महत्व की समझ विकसित करना।
- बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों की जानकारी देना।

सामग्री :

- स्लेट, किताबें एवं कापियां, छड़ी, कुर्सी, एक थैली/बोरा, थोड़े बड़े कागज के टुकड़े पर ''कक्षा–1, कक्षा–2, कक्षा–3, कक्षा–4, कक्षा–5 एवं वार्पिक परीक्षा लिखा रहना चाहिए तथा कुछ शीशे की गोलियां।

विधि : प्रथम चरण – मूक अभिनय

- प्रशिक्षक मूक अभिनय के माध्यम से एक कक्षा का चित्रण करें।
- सबसे पहले करीब 3 से 4 फुट की दूरी पर विभिन्न कक्षाओं के लिए अंकित किए गए कागज के टुकडों को एक कतार में बढ़ते कम में रख दें।
- कुर्सी को कक्षा 2 के आस पास कहीं रख दें।
- प्रशिक्षक/प्रेरक दल में से ही कोई एक शिक्षक का, एक छात्र का, एक निरीक्षक पदाधिकारी और एक अभिभावक की भूमिका अदा करेंगे। (आवश्यकता हो तो प्रतिभागी में से किसी एक को अभिभावक की भूमिका के लिए चुन सकते हैं)
- मूक अभिनय के बाद अभिनय के द्वारा दर्शाये गए तथ्यों पर पर चर्चा करें जैसे – कक्षा का वातावरण कैसा था? शिक्षक का स्वभाव कैसा था? अभिभावक (मां/पिता) की क्या भूमिका थी? बच्चों को पढ़ाने का तरीका क्या था? आदि

द्वितीय चरण

- प्रत्येक प्रतिभागी को अपने कापी पर यह लिखने को कहें कि जब वे प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ रहे थे तब विद्यालय का वातावरण कैसा था? पढ़ाने का क्या तरीका था? उस समय आपको पढ़ाने वाले शिक्षकों के दो गुण और दो अवगुण लिखें। क्या विद्यालय में आनंद आता था?
- उपरोक्त कार्य के लिए 30 मिनट का समय निर्धारित करें।
- सभी प्रतिभागियों द्वारा लिख लिए जाने के बाद 5-6 प्रतिभागियों को उनके द्वारा लिखे गए अनुभवों को पढ़ने को कहें।
- पढ़े जाने के कम में महत्वपूर्ण बिन्दुओं को श्यामपट पर लिखते जाएं।

निर्देश :

☞ उपरोक्त दोनो चरण के अभ्यास से उभरे बिन्दुओं के आधार पर बच्चों के सीखने की प्रकिया में बाधक तत्वों या सीख को प्रभावित करने वाले कारकों की सूचि बड़े समूह में चर्चा करके श्यामपट्ट पर बनायें।

☞ अब श्यामपट्ट पर लिखे बिन्दुओं को जोड़ते हुए विद्यालय वातावरण से संबंधित निम्नलिखित बातों से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

विघालय वातावरण एवं व्यवस्था

बालक को वर्तमान पेचीदा समाज में किस प्रकार के सामर्थ्यों की आवश्यकता होगी, इसके बारे में सही पूर्वानुमान असम्भव है। जबकि बालकों की सीखने की क्षमताओं और उन पर डाले जाने वाले बोझ की सीमाएं होती हैं। इन सब चीजों को ध्यान में रखते हुए देखें तो यह आवश्यक लगता है कि उपरोक्त तीनों क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से ऐसा आधारभूत काम होना चाहिए जो बालक–बालिकाओं को आगे सतत् रूप से सीखने में प्रवृत्त कर सके, उसमें सीखने के लिए आत्मविश्वास जगाये एवं सीखने की आधारभूत क्षमतायें विकसित करें। अतः शिक्षा के उद्देश्यों के साथ–साथ एक चीज और जोड़ने की आवश्यकता है–**''सतत् रूप से सीखते रहने में रूचि रखना एवं स्व शिक्षण की क्षमता।''**

इस दृष्टि से देखने पर प्राथमिक शिक्षा में ''प्राथमिक'' शब्द का मूल भाव कुछ प्रारम्भिक तैयारी मात्र नहीं रह जाता है अपितु यह भाव रेखांकित होता है कि वे आधारभूत काम करना जिसमें बच्चों में विभिन्न क्षमताओं/दक्षताओं/कौशलों के विकास से विस्तृत आधारभूमि तैयार हो। जिसमें बालक बाद में जिस क्षेत्र में अपना विकास करना चाहे, उस क्षेत्र से सम्बधिन्त मूलभूत क्षमताएं/दक्षतायें/कौशल उसके पास हों। अर्थात प्राथमिक का अर्थ प्रारम्भिक न होकर आधारभूत हो जाता है।

समूह/कक्षा व्यवस्था

सामान्यतः बच्चे समूह/कक्षा में कतारों में जमीन पर या डेस्क–कुर्सियों पर बैठते हैं। शिक्षक उनके सामने ऊँची मेज कुर्सी पर बैठता है। इस बैठक व्यवस्था में अन्तर्निहित मान्यताएं कुछ इस प्रकार हैं –

- शिक्षक समस्त ज्ञान का स्रोत एवं उसे प्रदान करने वाला है। बच्चे मात्र ज्ञान को ग्रहण करने वाले हैं।
- समस्त ज्ञान का स्रोत होने से शिक्षक के पास सभी बच्चों पर शासन करने के लिए पर्याप्त सत्ता/अधिकार होने चाहिए।
- शिक्षक की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि वह सभी बच्चों पर नजर रख सके। बच्चे अन्य सभी बच्चों के चेहरे देख सकें यह जरूरी नहीं। अतः शिक्षक को पूरे समूह में संबंधित सूचनाएं अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक मिलती रहती है। इसमें पूरे समूह के साथ व्यवहार करने में बच्चों की तुलना में शिक्षक लाभदायक स्थिति में रहता है।

- बच्चों को आपस में एक दूसरे के सहयोग से सीखने के बहुत कम अवसरों की जरूरत होती है। अतः इस व्यवस्था में बच्चों का आपसी बातचीत करना बुरा माना जाता है।
- सभी बच्चों की सीखने की गति एक जैसी होती है। अतः सभी बच्चे शिक्षक द्वारा सिखायी जा रही चीजें एक साथ, एक ही गति से व एक ही तरीके से सीख सकते

विषय : *भय एवं दण्ड व्यवस्था*

भोजनोपरान्त सत्र

उद्देश्य :

- प्राथमिक कक्षाओं में भय एवं दण्ड व्यवस्था के सम्बंध में समझ विकसित करना।
- भय एवं दण्ड किस प्रकार बालक पर प्रभाव डालती है, इससे प्रतिभागियों को अवगत कराना।

विधि :

- प्रतिभागियों को तीन समूह में विभक्त करें।
- समूह–1, 2 एवं 3 को क्रमशः निम्नलिखित विषय पर समूह चर्चा करने को कहें।

    - **क्या पेशेवर अपराधी और बालक को भय एवं दण्ड के मामले में एक श्रेणी में रखा जाना चाहिए यदि हां तो क्यों? और नहीं तो क्यों?**
    - **क्या विद्यालय में बच्चों के कुछ कर्म इस स्तर के होते हैं कि उनके लिए दण्ड दिया जाए? यदि हां तो वे कौन से कर्म हैं या हो सकते हैं? यदि नहीं तो क्यों?**
    - **क्या विद्यालयों में प्रचलित दण्ड बालक के सीखने–सिखाने में कोई बाधा उत्पन्न करते हैं। यदि हां तो कैसे? यदि नहीं तो कैसे?**

- चर्चा के उपरान्त सभी समूह अपने बिन्दुों को चार्ट पेपर पर लिखे और प्रस्तुतिकरण करें।
- प्रस्तुतिकरण के बाद प्रशिक्षक समूह चर्चा के बिन्दुओं को डीब्रीफ करें और भय एवं दण्ड व्यवस्था से जुडे निम्नलिखित तथ्यों से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

भय एवं दण्ड व्यवस्था

बच्चों के समूह के साथ काम करते समय एक तरह के अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है। आमतौर पर अनुशासन बनाये रखने के नाम पर दण्ड, का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। विद्यालय में इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः इन चीजों के बारे में प्रतिभागियों में स्पप्ट व साझी समझ बनाने की आवश्यकता है।

भय–दण्ड में गहरा अन्तर्सबंध है। भय आमतौर पर किसी अनिप्ट की संभावना से

को सहजतापूर्वक कह सुन नहीं सकता।

2. इसकी वजह से बच्चे की सीखने की गति भी प्रभावित होती है। जिस तरह भय के उपस्थित होने पर बड़े भी असहाय हो जाते हैं उसी तरह बच्चे भय के सम्मुख असहाय हो जाते हैं और इस समय सीखने में एक तरह से असमर्थ हो जाते हैं।
3. बिना समझे बात स्वीकार कर लेने में आमतौर पर बच्चे दबाव हटते ही शिक्षक की बातों की अवहेलना शुरू कर देते हैं।
4. भय की स्थिति में सीखने में आनन्द एवं स्वतंत्र चिन्तन के विकास की सम्भावनाएं कम हो जाती हैं।
5. भय का माहौल बच्चों की जिज्ञासाओं, स्वाभाविक रूझानों, सृजनशीलता, कल्पनाशीलता के विकास की सम्भावनाओं पर कुठाराघात कर उन्हें सत्ता की प्रति आज्ञाकारी बनाने के लिए प्रेरित करता है।
6. भय के माहौल में बच्चों के स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास की सम्भावनायें सीमित हो जाती हैं और भय बच्चों को कुंठित करने में अधिक योगदान करता है।

इसके अलावा भी भय के कई और दुष्प्रभाव खोजे जा सकते हैं। इन दुष्प्रभावों को देखते हुए बच्चों के विकास में भय एक बाधक तत्व प्रतीत होता है।

आमतौर पर दण्ड को भय पैदा करने के लिए एक बहुत सशक्त तरीके के रूप में काम में लिया जाता है। अतः इसे समझना जरूरी हो जाता है। अपने विस्तृत अर्थो में दण्ड ऐसी शारीरिक या मानसिक यातना है जो किसी के अधिकारों का हनन या किन्हीं नियमों के उल्लघंन पर दी जाती है।

दण्ड के इस अर्थ का मोटा समबंध पुलिस और न्याय व्यवस्था से जुड़ा हुआ है। परन्तु प्राथमिक शाला के संदर्भ में भी कई बार दण्ड का प्रयोग इन्हीं अर्थो में कर लिया जाता है।

प्राथमिक विद्यालय के संदर्भ में दण्ड की आवश्यकता, नियमों का पालन करवाने, शिक्षक की बात मनवाने, समूह/कक्षा में व्यवस्था व चुप्पी बनाये रखने इत्यादि के लिए होती है। इनके लिये शारीरिक व मानसिक दण्डों का खुल कर प्रयोग किया जाता है। अतः उनके उदाहरणों की शायद यहां जरूरत नहीं है। वैसे इस बात पर भी समूह में चर्चा की जा सकती है कि शारीकि व मानसिक दण्ड में से कौन सा अधिक प्रभावी होता है और क्यों?

चूंकि दण्ड मूलतः भय पैदा करने का औजार है और भय के प्रभावों/दुष्प्रभावों का जिक्र पहले किया जा चुका है, अतः यहां उन्हें दोहराने की जरूरत नहीं हैं। लेकिन दण्ड की व्यवस्था में अन्तर्निहित कुछ चीजों पर यहां ध्यान देना शायद उचित होगा।

समूह/कक्षा व विद्यालय में दण्ड का अधिकार मूलतः शिक्षक के पास सुरक्षित होता है। शारीरिक रूप से बच्चों से कहीं अधिक सक्षम शिक्षक को दण्ड का अधिकार एक शक्तिशाली व्यक्ति बना देता है, जिसमें शिक्षक आमतौर पर सही और बच्चे आमतौर पर गलत होते हैं। साधारणतः बच्चों को उसके व्यवहार/कार्यों पर प्रश्न उठाने का

इसी तरह दण्ड, भय के माहौल में बालक की स्वतंत्रता काफी सीमित हो जाती है। वह अपनी इच्छा से बोल नहीं सकता, मदद नहीं कर सकता, अपनी जगह से हिल नहीं सकता इत्यादि। इसी बंधाई व सीमित दिनचर्चा का ही शायद यह प्रभाव पड़ता है कि साधारणतः बच्चे छुटटी की घंटी के बाद विद्यालय से ऐसे निकल भागते हैं जैसे जेल से छूटे कैदी।

बच्चों के विकास के लिए उन्हें स्वतंत्रता शुरू से ही हो इसकी आवश्यकता पड़ती है तभी वे स्वनिर्णय लेने वाले व्यक्ति के रूप में विकसित हो पायेंगे। जो कि शिक्षा का हमारा एक स्वीकृत उद्‌देश्य है। यहां स्वतंत्रता अपने आप में असीमित नहीं है। समूह में काम करते समय प्रत्येक की स्वतंत्रता अन्य बच्चों की स्वतंत्रता से सीमित हो जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि समूह/कक्षा में ऐसा माहौल हो कि बच्चे दूसरों की स्वतंत्रता का ख्याल रखते हुए स्वयं का कार्य स्वतंत्रतापूर्वक करते रहें। अर्थात यदि एक बच्चे की स्वतंत्रता की वजह से पूरे समूह या अन्य बच्चों को परेशानी हो रही हो तो उसका कोई समाधान ढूंढने की जरूरत हो सकती है जो कि बातचीत के माध्यम से किया जा सकता है।

अब तक भय, दण्ड स्वतंत्रता पर जो विचार किया गया है उसमें ऐसा प्रतीत होता है कि साधारणतः दण्ड, भय को अनुशासन बनाये रखने एवं स्वतंत्रता को बाधित करने के लिए

इस तरह निरन्तर बातचीत करते रहकर एवं आवश्यकता पड़ने पर नये नियम बनाने, पुराने नियम छोड़ने/संशोधित करते रहने पर धीरे–धीरे समूह में एक भिन्न प्रकार की व्यवस्था उत्पन्न होगी जिसमें समूह के अधिकाशं सदस्यों की भागीदारी होगी। चूंकि इस व्यवस्था को शुरू एवं विकसित करने में पूरे समूह की भागीदारी होगी। अतः वह व्यवस्था समूह पर आरोपित नहीं होगी और समूह का उसमें स्वाभाविक जुड़ाव होगा। स्वयं द्वारा बनाई गई व्यवस्था में फेरबदल के अधिकार समूह के पास होंगे तो व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी भी, अतः उसके साथी सभी सदस्य अधिक सहज एवं स्वतंत्र महसूस करेंगे।

तुलना और प्रतिस्पर्धा

तुलना और प्रतिस्पर्धा आज समाज के बहुत बड़े हिस्से का आवश्यक अंग बन चुकी है। कई शिक्षा प्रणालियों/कार्यक्रमों में भी यह अंगद के पांव की तरह जमी हुई है। अतः इसके स्वरूप एवं प्रभावों को समझने की जरूरत है।

तुलना व प्रतिस्पर्धा के सामान्यतः निम्न प्रभाव स्वीकार किये जाते हैं :

1. परस्पर तुलना से पिछड़े रहे व्यक्ति/बच्चे को आगे बढ़ने, तीव्र गति से सीखने की प्रेरणा मिलती है।
2. प्रतिस्पर्धा में ही व्यक्ति/बच्चे अपनी क्षमताओं/दक्षताओं को पूरी तरह से एवं तीव्र गति से विकसित कर पाते हैं।
3. प्रतिस्पर्धा के बगैर विकास संभव नहीं है।

प्रतिभागियों में पूरी प्रक्रिया की काफी गहरी समझ बन पायेगी और विद्यालय में इस व्यवस्था को विकसित करने की संभावनाएं अधिक रहेंगी।

☞ प्रतिभायिगों को ''तुलना और प्रतिस्पर्धा'' से सम्बंधित निम्नलिखित तथ्यों से भी

अवगत करायें।

उपर्युक्त प्रभावों को समझने के लिए सर्वप्रथम यह समझना जरूरी है कि क्या मानव–मानव में तुलना की जा सकती है? हम यह स्वीकार कर चुके हैं, कि प्रत्येक मानव के सीखने की गति भिन्न होती है। इसी तरह सभी की रूचि व स्वभाव भी एक ही चीज में नहीं होती। अतः भिन्न–भिन्न रूचि, स्वभाव एवं सीखने की गति वाले मानवों की परस्पर तुलना कैसे की जा सकती है? पहली नजर में यह न्यायोचित नहीं जान पड़ता।

इसी तरह तुलना में किसी एक व्यक्ति को किसी एक चीज में श्रेप्ठ मानकार अन्य व्यक्तियों को उससे प्रेरणा लेने की सलाह दी जाती है इस चीज के दो तीन तरह के दुष्प्रभाव पड़ने की सम्भावना रहती है पहली, जिसे श्रेप्ठ बताया जाता है।

उसमें अंहकार की वृद्धि होती है। इस चक्कर में वह सीखना भी बन्द/कम कर सकता है। वह स्वयं को श्रेप्ठ व दूसरे को निकृप्ट समझने लगता है भले ही अन्य पचास बातों में वह औरों से बहुत अधिक पिछड़ा हो। वह उसी चीज को विकसित करने की तरफ अधिक ध्यान लगा सकता है, क्योंकि अन्यों द्वारा, समाज द्वारा, उसकी बड़ाई की जा रही है अतः अन्य क्षमताओं के विकास की तरफ वह कम ध्यान दे पाता है, जिसमें शायद उसके लिए बेहतर सम्भावनाएं हों। क्योंकि तारीफ करने वाला आमतौर पर अपनी रूचि/स्वभाव/जरूरतों के आधार पर तय करता है न कि तारीफ किये जा रहे व्यक्ति की संभावनाओं को ध्यान में रख कर।

दूसरा और महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव यह पड़ता है कि बाकी सभी के मन में घोपित किये गये श्रेप्ठ के प्रति ईर्प्या की भावना एवं स्वयं के लिए हीन भावना जन्म लेती हैं। अतः समूह में एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ की प्रवृति बढ़ने लगती है। चूंकि सभी की क्षमताएं/दक्षताएं भिन्न–भिन्न होती हैं अतः धीरे–धीरे सीखने का मामला कम होता जाता

इसी तरह प्रतिस्पर्धा की उपस्थित में सहभागिता की सम्भावनाएं बहुत कम रह जाता है। जहां आगे बढ़ने की होड़ एक मान्यता प्राप्त मूल्य हो वहां आपसी सहयोग से सीखना एक काल्पनिक स्थिति रह जाती है, और जहां आपसी सहयोग न हो वहां मानवीय गुणों के विकास की सम्भावनाएं भी अत्यन्त क्षीण हो जाती हैं।

ईर्ष्या, हीनभावना में बढ़ोत्तरी व मानवीय गुणों के क्षरण के प्रभावों की विवेचना की शायद यहां जरूरत नहीं, आसपास नजर दौड़ने पर आज के समाज में इसके ढेरों उदाहरण मिल जायेंगे।

अतः प्रशिक्षण के दौरान तुलना व प्रतिस्पर्धा के प्रभावों पर विवेचना करके आपसी सहयोग से सीखने–सिखाने की प्रक्रिया पर एक साझी समझ बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

- ⇒ **रात्रि कार्य – किसी एक ऐसी घटना का वर्णन करें जिसमें आपने प्राथमिक विद्यालय में भय एवं दण्ड का अनुभव किया था।**
- ⇒ **पुनरावृति**
- ⇒ **मिजाजोमीटर**

आठवाँ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं प्रतिवेदक का चयन
⇒ रात्रि कार्य पर चर्चा

विषय : *प्राथमिक स्तर पर बच्चों को क्या सिखाना चाहिए ?*

उद्देश्य :

- बच्चों को प्राथमिक स्तर पर क्या सिखाना है, की जानकारी देना।

विधि :

- विगत दिन ''बच्चे कैसे सीखते है'' विषय के चर्चा के दौरान (6-9 आयु वर्ग के बच्चे क्या कुछ जानते हैं) उभरे बिन्दुओं की पुनरावृति करते हूए आगे की चर्चा शुरू करें।
- बड़े समूह में चर्चा के क्रम में 6-9 आयु वर्ग के बच्चे क्या कुछ जानते हैं की सूचि तैयार करें।
- चर्चा के क्रम में प्रतिभागियों को बतायें कि आपके केन्द्र में आने से पहले बच्चे बहुत कुछ जानते हैं और उनके पास अनेक कामों का अनुभव होता है।
- आवश्यकता इस बात की है कि उन जानकारियों एवं अनुभवों के आधार पर बच्चों को आगे सिखाया जाए।
- प्रतिभागियों को निम्नलिखित जानकारियों से अवगत करायें।

पाठ्य क्रम

शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बच्चों को क्या–क्या सिखाया जाना चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर में पाठ्यक्रम की अवधारणा और पाठ्यक्रम तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए, इन दोनों ही बातों पर विचार करना आवश्यक है। कारण बच्चों को बहुत सी चीजें सिखानी पड़ेगी उनमें बहुत सी क्षमताओं के विकास के

- शिक्षाक्रम अथवा पाठ्यक्रम (परिशिष्ट – 1 में वर्णित) की एक प्रति प्रत्येक प्रतिभागियों को उपलब्ध करायें।
- प्रतिभागियों को इस पाठ्यक्रम को ध्यान से अध्ययन करने को कहें।
- शिक्षा क्रम/पाठ्यक्रम से जुड़े प्रश्नों का उत्तर प्रशिक्षक प्रतिभागियों को दें।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *बच्चों को कैसे सिखाना चाहिए ?*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को शिक्षण विधियों की जानकारी देना।

सामग्री :

- मानव शरीर का चित्र, एक मेढ़क, एक छोटा डब्बा, एक छड़ी तथा एक कुर्सी।

विधि :

- अभिनय द्वारा एक परम्परागत कक्षा का चित्रण करें एवं मानव शरीर को परम्पारिक ढंग से पढ़ायें।

- अब अभिनय द्वारा मेढ़क का उपयोग करते हुए शिक्षण प्रक्रिया को मनोरंजक एवं रूचिपूर्ण बनाये एवं मानव शरीर के अंगों की जानकारी दें। इस प्रक्रिया में खेल, गीत आदि का प्रयोग करें।
- उपरोक्त दोनों प्रकार के अभिनय के उपरान्त प्रतिभागियों को चार या पांच छोटे समूह में विभक्त करें और प्रत्येक समूह को प्रस्तुत किये गए शिक्षण के दोनों विधियों में क्या अन्तर था इस विषय पर समूह चर्चा करने को कहें।

निर्देश :

☞ उपरोक्त अभिनय में प्रेरक/प्रशिक्षक शिक्षक की भूमिका करें एवं प्रतिभागियों को छात्रों/बच्चों की भूमिका करने को कहें।

☞ समूह चर्चा के उपरान्त प्रत्येक समूह अपने बिन्दुओं को चार्ट पेपर पर लिखे और प्रस्तुतिकरण करें।

☞ प्रस्तुतिकरण के बाद चर्चा को डीब्रीफ करें और परम्परागत एवं रोचक विक्षण विधि से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

निप्कर्ष

- पहला अभिनय शिक्षक केन्द्रित है और दूसरा बाल–केन्द्रित।
- दूसरी विधि रोचक एवं ज्यादा प्रभावी है, आदि।

विषय : *नौ बिन्दु चार लकीर*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को यह महसूस कराना कि शिक्षा के प्रति हमारी सीमित धारणा है और समाधान पाने के लिए हमें उस सीमा से बाहर निकलना होगा।
- शिक्षण विधियों के प्रयोग में सृजनशील होना आवश्यक है, यह महसूस कराना।

विधि :

- व्यक्तिगत अभ्यास/प्रयास।
- श्यामपट पर 9 बिन्दु निम्न प्रकार से अंकित कर दें और कहें कि इन 9 बिन्दुओं को 4 सरल रेखाओं से मिलाना है।

. . .
. . .
. . .

- व्यक्तिगत रूप से सभी प्रतिभागी अपने–अपने कापी पर अभ्यास करेंगे और सफलता मिलने पर उसे श्यामपट पर आकर बनायेगें।
- प्रयास के लिए 30-45 मिनट का समय दें। (आवश्यकतानुसार समय का निर्धारण प्रशिक्षक कर सकते हैं)

निर्देश :

☞ प्रतिभागियों को निम्नलिखित स्पप्ट कर दें –

- ❑ नौ बिन्दुओं को चार सरल रेखाओं से जोड़ना है।
- ❑ कलम नहीं उठाना है।
- ❑ एक रेखा के उपर दुबारा रेखा नहीं खीचनीं है (परन्तु रेखाएं एक दूसरे को काट सकती हैं)
- ❑ अपने–अपने कापी पर प्रयास करें।

☞ प्रतिभागियों द्वारा उपरोक्त कार्य नहीं कर पाने की स्थिति में प्रशिक्षक श्यामपट्ट पर 9 बिन्दुओं को 4 सरल रेखाओं से मिलाकर दिखाये

निप्कर्ष :

- समस्याओं का समाधान वहीं मौजूद है।
- समस्याओं के समाधान के लिए हमें काल्पनिक दायरे से बाहर निकल कर सोना होगा।

⇒ **रात्रि कार्य – ''मेरे सपनों का विद्यालय'' विषय पर लेख लिखें।**
⇒ **पुनरावृति**
⇒ **मिजाजोमीटर**

नवॉ दिन

भोजनपूर्व/भोजनोपरान्त सत्र

⇒ **गीत**
⇒ **प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण एवं प्रतिवेदक का चुनाव**
⇒ **रात्रि कार्य**

विषय : *शिक्षण विधि*

उद्देश्य :

- शिक्षण विधियों पर प्रतिभागियों की समझ को और विकसित करना।
- शिक्षण विधियों के प्रयोग में दक्ष बनाना।

विधि :

- शिक्षण विधियों पर प्रतिभागियों की समझ को और विकसित करने के लिए प्रतिभागियों से यह चर्चा करें कि ''प्रशिक्षण के बाद आप भी शिक्षक के रूप में कार्य करगें। आप बच्चों के साथ भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन एवं हस्तकारी विषयों पर काम करगें। अतः अभी हम लोग एक अभ्यास करेगें।
- इसके बाद निम्नलिखित बातों को श्यामपट पर लिखें –

भाषा – अक्षरों का ज्ञान
– मात्राओं का ज्ञान

गणित – 1 से 10 तक गिनती सिखाना
– 10 से 20 तक की संख्याओं के जोड़ सिखाना

पर्यावरण अध्ययन – सजीव–निर्जीव की अवधारणा स्पप्ट करना

हस्तकार्य – चित्र बनाकर रंग भरना

- श्यामपट्ट पर लिख देने के बाद प्रतिभागियों को सादा कागज उपलब्ध करवा दें, और उनसे कहें कि भाषा, गणित पर्यावरण एवं हस्तकार्य की उपरोक्त बातों को आप बच्चों को रोचक विधि से कैसे सिखायेंगे। इसकी कार्य योजना बनायें।
- उपरोक्तक कार्य के लिए 30 मिनट का समय निर्धारित करें।
- काम पूरा होने के बाद प्रतिभागियों से कागज एकत्र कर लिये जाए और उनमें से कुछ प्रतिभागियों के विचार समूह में पढ़ कर सुनायें। यदि सम्भव हो तो उन्हें बिन्दुओ के रूप में श्यामपट पर लिखें।
- इसके बाद इन तरीकों पर समूह में चर्चा की जाए एवं उनके गुण–दोपों का विश्लेषण करें।

विषय : *पाठ निर्माण एवं प्रदर्शन*

उद्देश्य :

- रोचक गतिविधियों का प्रयोग करते हुए पाठ निर्माण कर शिक्षण कार्य में दक्ष बनाना।

विधि :

- सभी प्रतिभागियों को उनके द्वारा भाषा, गणित, पर्यावरण एवं हस्तकार्य के लिए पूर्व के अभ्यास में बनाये गए योजना वाले कागज को वापस कर दें।
- प्रतिभागियों को 5 छोटे समूहों में विभक्त कर दें।
- अब प्रत्येक समूह को उनके सदस्यों द्वारा तैयार किये गए पाठ योजना को मिलाकर एक समेकित पाठ योजना तैयार करने को कहें।
- इस कार्य के लिए 60 मिनट का समय निर्धारित करें।
- पाठ–योजना निर्माण के बाद प्रत्येक समूह को पाठ प्रदर्शन करने को कहें।
- प्रत्येक समूह के पाठ–प्रदर्शन के बाद उस पर समूह में चर्चा करें और सुझाव–सुधार का कार्य करें।

निर्देश :

☞ प्रतिभागियों को स्पप्ट कर दें कि प्रस्तुतिकरण के दौरान प्रस्तुतकर्ता समूह के सदस्य शिक्षक की भूमिका में तथा शेप प्रतिभागी बच्चों की भूमिका में होंगे।

☞ प्रत्येक समूह को पाठ प्रदर्शन हेतु उनके आवश्यकतानुसार चार्ट पेपर, कैंची गोंद, पिन आदि उपलब्ध करायें ताकि इनका उपयोग शिक्षण सामग्री के निर्माण में किया जा सके।

⇒ **रात्रि कार्य – शिक्षित और साक्षर में क्या अन्तर है।**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

दसवॉ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण
⇒ रात्रि कार्य पर चर्चा

विषय : *रोचक शिक्षण विधियां*

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों को पढ़ाने के विभिन्न विधियों से अवगत कराना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा करें कि विगत दिन पाठ प्रदर्शन के दौरान हमने किन–किन रोचक विधियों का प्रयोग किया। उदाहरणार्थ – गीत, कहानी, खेल आदि।
- अब प्रतिभागियों को इसकी सूची बढ़ाने को कहें।
- प्रत्येक प्रतिभागी को बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।

निष्कर्ष :

- नाटक / अभिनय
- फलैश कार्ड
- प्रदर्शन
- भ्रमण
- कविता
- पहेली

विषय : *विषय-वस्तु आधारित शिक्षण*

उद्देश्य :

- विषय–वस्तु (थीम) को आधार बनाकर रोचक शिक्षण कैसे करें की जानकारी देना।
- केन्द्र शुरूआत के बाद बच्चों के बीच शिक्षण कार्य कैसे करना है इसकी जानकारी देना।
- पाठ–निर्माण एवं शिक्षण में दक्ष बनाना।

विधि :

- प्रतिभागियों को पांच छोटे समूहों में विभक्त करें।
- श्यामपट पर भाषा, गणित एवं पर्यावरण के प्रारम्भिक दक्षताओं/पाठ्यक्रम (देखें परिशिष्ट – 1) को लिख दें।
- अब प्रतिभागियों को ''त्यौहार'' विषय लेकर भाषा, गणित एवं पर्यावरण की उपरोक्त दक्षताओं को पढ़ाने के लिए पाठ योजना तैयार करने को कहें।
- प्रत्येक समूह को यह स्वतंत्रता दें कि वे कोई भी त्यौहार (राष्ट्रीय या धार्मिक) को आधार बनाकर पाठ योजना तेयार कर सकते हैं।
- प्रतिभागियों को यह भी स्पष्ट करें कि वे पूर्व में चर्चा की गई विधियों का समावेश अपने पाठ योजना में अवश्य करें।
- पाठ–प्रदर्शन के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री के निर्माण के लिए भी उन्हें प्रोत्साहित करें।
- उपरोक्त कार्य के लिए प्रत्येक समूह को चार्ट पेपर, गोंद, कैंची, रंग, स्केचपेन आदि उपलब्ध करायें
- पाठ योजना निर्माण के लिए 60 मिनट का समय निर्धारित करें।
- जब समूह पाठ योजना का निर्माण कर रहा हो तो प्रशिक्षक प्रत्येक समूह में जाकर समूह को आवश्यक दिशा निर्देश/मदद कर सकता है परन्तु प्रशिक्षक अपने विचार को समूह पर न थोपें।
- पाठ योजना तैयार होने पर प्रत्येक समूह द्वारा उसका प्रस्तुतिकरण कक्षा का माहौल बनाकर किया जाए।
- प्रत्येक प्रस्तुति पर समूह में विस्तृत चर्चा की जाए। इसका ध्यान रखा जाए कि चर्चा सुधार संबंधी हो न कि किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहार पर टिप्पणी की जाए।

ग्यारहवां दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ **गीत**

⇒ **प्रतिवेदन**

विषय : *थीम आधारित शिक्षण के विषय-वस्तु*

उद्देश्य :

- विषय–वस्तु की सूची तैयार करना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा।
- प्रत्येक प्रतिभागी को एक–एक विषय–वस्तु बताने को कहें – उदाहरणार्थ 'त्योहार' आदि।

निष्कर्ष :

- जंगल, मेला, पहाड़, पशु, पक्षी आदि।

विषय : *खेल/गीत/कविता, कहानी नाटिका का शिक्षण में महत्व*

उद्देश्य :

- सीखने की प्रक्रिया में खेल, गीत, कविता, कहानी, एवं नाटिका के प्रयोग के महत्व को समझना।
- खेल, गीत, कविता, कहानी, नाटिका का संकलन एवं निर्माण करना।

विधि :

- प्रतिभागियों के बीच कोई खेल खिलावायें।
- खेल के उपरान्त प्रतिभागियों से पूछें कि हम लोगों ने खेल क्यों खेला या प्रशिक्षण के दौरान बीच–बीच में हम खेल क्यों खेलते हैं।
- प्रतिभागियों से प्राप्त उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखें।

- प्राप्त उत्तरों को जोड़ते हुए निम्नलिखित बातों से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

शिक्षण में खेल/गीत/कहानी/नाटक का महत्व और उपयोगिता

बच्चा जब शुरूआत में विद्यालय आता है तो वह एक प्रकार के माहौल (घर और उसका परिवेश) से दूसरे अलग प्रकार के माहौल में आता है। बच्चा स्वभावतः खेलना, स्वतः कुछ बनाना मौजमस्ती करना आदि चीजें पसन्द करता है। जब तक वह विद्यालय नहीं आता है तब तक तो वह ऐसी बाल सुलभ क्रीड़ाएं करने के लिए प्रायः स्वतंत्र होता है पर विद्यालय में उसका खेलना, आदि बाल सुलभ क्रीड़ाएं प्रायः अबाध नहीं रह पाती। विद्यालय का वातावरण उसके लिए भय,

दबावपूर्ण बन जाता है। वह एक ढांचें में ढलना शुरू हो जाता है, जिससे उसका बाल विकास अवरूद्ध होता जाता है। स्कूली गतिविधियां उसको प्रायः अजनबी व नई लगती है, जिसमें वह अपने आप को व्यवस्थित करने में काफी कठिनाई महसूस करता है।

इसके विपरीत यदि विद्यालय में खेल/गीत/कहानियां/नाटक आदि गतिविधियां की जायें तो स्कूल का माहौल उसे अजनबी व अलग नहीं लगेगा। साथ ही ऐसी गतिविधियों में बालकों को मजा भी आता है। वे स्कूल के प्रति आकर्पित भी होते हैं। इन गतिविधियों से स्कूल का माहौल आनन्द दायक व रूचि कर बन जाता है। साथ ही शिक्षक व बच्चों का रिश्ता मधुर, बालक–बालक का रिश्ता सहयोगात्मक होता चला जाता है। इससे सीखने–सिखाने में काफी मदद मिलती है।

साथ ही ये गतिविधियां भाषा, गणित व पर्यावरण अध्ययन की प्रारम्भिक क्षमताओं के विकास में काफी मददगार साबित होती हैं।

खेल : खेल बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में निम्नलिखित रूप से मदद करती है।

- सीखने के लिए सीखने का माहौल या वातावरण का होना अनिवार्य है जिसमें बच्चा सहज रह सके। यह तभी सम्भव है जब विद्यालय का वातावरण भय रहित हो तथा अध्यापक के साथ बच्चों का सहज व स्नेहपूर्ण सम्बन्ध हो इस प्रकार के वातावरण के निर्माण में खेल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- सीखने की प्रक्रिया में गतिविधियां चलाने के लिए आवश्यक है कि बच्चों का एक ऐसा समूह बने जो सीखने के लिए उत्सुक हो ऐसे समूह में काम करने के लिए बच्चों को कुछ चीजें समझना और सीखना आवश्यक होता है – जैसे एक दूसरे का सहयोग करना, दूसरे बालकों की बाते ध्यान से सुनना, उनके क्रिया कलापों को आवश्यकता पड़ने पर देख पाना अपनी बारी का इन्तजार करना आदि। ये सब बातें खेल के माध्यम से स्वतः होती चली जाती है।
- खेलों में कुछ नियम कायदे होते हैं। खेल में भाग लेने वाले बच्चों के लिए उनको जानना, मानना या पालन करना आवश्यक होता है। इस बात में भाषा शिक्षण, सामाजिक विकास तथा विद्यालयी वातावरण को बनाने की असीम सम्भावनाएं जुड़ी हैं।
- किसी बच्चे को सिखाने से पहले उसकी वर्तमान क्षमताओं, उसके स्वभाव या रूझाानों को समझने की आवश्यकता है। चूंकि खेल के दौरान बच्चा सहज अवस्था में होता है और उस अवस्था में उसका स्वभाव क्षमता आदि स्पप्ट रूप से दृप्टिगोचर होता है। अतः बच्चे के साथ खेलने से शिक्षक को सहज ही सारी जानकारी मिल जाती है।
- खेल में ध्यान केन्द्रण तथा ध्यान से देखने, सुनने आदि के अभ्यास की बहुत सम्भावनाए हैं।

खेल के चयन में पहले वे खेल अधिक चुने जिन्हें बच्चे विद्यालय के बाहर भी खेलते रहते हैं।

कहानी : बाल शिक्षण में कहानी का महत्व निर्विवाद रूप से स्वीकार किया गया है। बच्चों के शिक्षण में कहानी पर आधारित गतिविधियों को हम तीन भागों में

बांट सकते हैं।

1. शिक्षक द्वारा कहानी सुनाना।
2. बच्चों द्वारा कहानी सुनाना।
3. समूह में कहानी सुनाना।

1. शिक्षक द्वारा कहानी सुनाना

- कहानी की भाषा, शब्द या वाक्य में बच्चों के लिए अनजाने तत्व इतने ही हो कि उनको समझने में चुनौती मिले। यह बातें इतनी अधिक न हो कि बच्चा उसमें उलझ के रह जाये।
  - ❑ कहानी नई कल्पनाएं करने, नई अवधारणाएं बनाने पर बच्चों को मजबूर करें।
- जहॉ तक हो सके आरम्भ में कहानी को बच्चों की अपनी भाषा (क्षेत्रिय) में सुनाने का प्रयत्न करना चाहिये।
  - ❑ ये कहानियॉ क्षेत्र विशेष की प्रचलित कहानियॉ हो सकती हैं।
  - ❑ कहानी सुनाने में चित्रों का प्रयोग करें।
  - ❑ कहानी सुनाते समय शिक्षक के हाव भाव एवं आवाज में उतार चढाव होना चाहिये।
- कहानी सुनाने के क्रम में यह जांचते रहे कि बच्चों को कहानी समझ में आ रही है या नहीं।

2. बच्चों द्वारा कहानी सुनाना

- बच्चे अपने घर पर बड़े बुजुर्गों से कहानियॉ सुनते हैं। अतः उनमें भी कहानी सुनाने की उत्कन्ठा होती है।
- शिक्षकों को चाहिये कि वो बच्चे से कहानी सुने और कहानी कहने के लिए उसे प्रेरित करें।

3. समूह में कहानी बनाना एवं सुनाना

- समूह में कहानी बनाने एवं सुनाने का अर्थ है कि समूह का कोई सदस्य एक वाक्य बोल कर कहानी आरम्भ कर दें और फिर बारी–बारी से सभी सदस्य एक–एक वाक्य जोड़ते हुए उस कहानी को आगे ले जाए जैसे

एक जंगल था। दूसरा सदस्य जोड़ें – उसमें एक शेर रहता था ....
............। बच्चों के बीच यह प्रक्रिया करने पर आरम्भ में यह हो सकता है कि कहानी ठीक न बने फिर भी शिक्षक उस कहानी को स्वीकार करें।

गीत / कविता

हम जीवन में बहुत कुछ सुन कर सीखते हैं परन्तु शर्त यह है कि हम उसे ध्यान से सुनें। ध्यान से सुनने पर ही वह हमारी स्मृति में रह पाता है। गीत / कविता एक ऐसा माध्यम है जिसे साधारणतः बच्चे बेहद ध्यान से सुनते हैं। अतः गीत और कविता के माध्यम से भाषा, गणित एवं पर्यावरण की समझ आसानी से बच्चों में लायी जा सकती है। साथ ही गीत कविता कल्पना को भी जागृत करने में सक्षम होते हैं।

नाटक

बच्चे जिस तरह कहानी में आनन्द लेते हैं। उसी तरह नाटक में भी आनन्द लेते हैं। नाटक करने में मन के साथ तन भी जुड़ा होता है। अतः नाटक में किसी बच्चे के द्वारा निर्धारित भूमिका उसके विचारों को सुदृढ़ करता है एवं गहनशीलता को बढ़ाता है। बालक जब स्वयं नाटक करते हैं तो कहानी की अपनी व्यक्तिगत समझ को समूह के सामने रखते हैं और दूसरे की समझ को ग्रहण करने का प्रयत्न करते हैं। संवाद बोलने से भाषा उच्चारण में स्पप्टात आती है तथा समझा और गहन होती है।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *खेल/गीत/कविता/कहानी/पहेली निर्माण*

उद्देश्य :

- बच्चों के शिक्षण में उपयोगी खेल/गीत/कविता/कहानी/पहेली का निर्माण एवं संकलन कराना।
- प्रतिभागियों को नये–नये खेल/गीत/कहानी/पहेली निर्माण का अभ्यास कराना।

विधि :

- प्रतिभागियों को चार छोटे समूह में विभक्त कर दें।
- समूह 1, 2, 3 एवं 4 को क्रमशः खेल, गीत या कविता, कहानी एवं पहेली निर्माण करने को कहें।
- इस कार्य के लिए 60 मिनट का समय निर्धारित करें। प्रशिक्षक आवश्यकतानुसार समय का पुर्ननिर्धारण कर सकते हैं।
- उपरोक्त कार्य पूर्ण होने पर प्रत्येक समूह के कुछ खेल, गीत, कहानी एवं पहेली का प्रदर्शन करवायें एवं आवश्यक सुधार–सुझााव पर पूरे समूह में चर्चा करें।

⇒ **रात्रि कार्य – प्रत्येक प्रतिभागी उनके क्षेत्र में प्रचलित एक कहानी एवं एक गीत/कविता जिसका उपयोग शिक्षण कार्य में किया जा सके लिखें।**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

बारहवॉ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदनेन प्रस्तुतिकरण एवं प्रतिवेदक का चुनाव
⇒ रात्रि कार्य पर चर्चा

विषय : *शिक्षण सामग्री*

उद्देश्य :

- शिक्षण सामग्री क्या की समझ विकसित करना।
- शिक्षण सामग्रियों का निर्माण सीखना।
- शिक्षण सामग्रियों का निर्माण करना।

विधि :

- समन्वयक सभी प्रतिभागियों को एक–एक पुराना अखबार दे दें।
- प्रतिभागियों से कहें कि वे इनसे विभिन्न आकार के कागज की नावें बनायें।
- बीस मिनट के उपरान्त नाव बनाने की प्रक्रिया को रोक दें।
- अब प्रत्येक प्रतिभागी को उसके द्वारा निर्मित नाव की संख्या बताने को कहें।
- इसके उपरान्त विभिन्न आकार के नावों को बढ़ते क्रम में या घटते क्रम में सजाने को कहें।
- इस प्रकार की अनेक गतिविधियां करने के बाद इस पर चर्चा करें कि नाव बनाने में कैसा लगा और इसका क्या उपयोग हुआ।
- उपरोक्त प्रक्रिया को पठन–पाठन में शिक्षण समाग्री के महत्व से जोड़े। एवं निम्नलिखित बातों से अवगत करायें।

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण सामग्री

समय के साथ–साथ बच्चों की शिक्षा के बारे में जो विश्वास व मान्यतायें स्थापित हुई हैं, इन्होंने हमारी 'रटन्त विद्या' पर आधारित प्राचीन शिक्षा प्रणाली को खारिज कर दिया है। अब बच्चों के सीखने की प्रक्रिया पर आधारित नवीन शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि 'रटकर सीखना', 'समझ कर सीखना' नहीं होता। इन नवीन मान्यताओं के अर्न्तगत इस बात पर महत्व दिया जा रहा है कि बच्चे तथ्यों को रटकर सीखने के बजाय खुद करके ज्यादा बेहतर सीखते हैं। इसलिए यह जरूरी माना जा रहा है कि बच्चों को विद्यालयों में स्वयं करके सीखने को अधिक से अधिक मौके दिये जायें। बच्चों को इस तरह के मौके देने के लिए हमारे लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम ऐसी शिक्षण सामग्री व गतिविधियों का निर्माण करें जिनका प्रयोग करते हुए बच्चे समझ के साथ सीख सकें। लेकिन बच्चों को सिखाने के इस प्रक्रम में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि इस प्रक्रिया में उनका बच्चों के साथ गहरा जुड़ाव होना आवश्यक है।

शिक्षा में हो रहे नवाचारों के अर्न्तगत बच्चों को सिखाने की नयी–नयी पद्धतियॉ विकसित हो रही हैं। इसके अर्न्तगत इस बात को जरूरी समझा जा रहा है कि प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य–पुस्तकों के अलावा ऐसी बहुत सी सामग्री हो सकती है। जिनका प्रयोग करते हुए बच्चे स्वयं अपने अनुभवों द्वारा सीख सकते हैं। इस तरह से सीखने की प्रक्रिया में बच्चे समझ के साथ सीखते हैं। किताबों से रटकर सीखना बहुत ही यांत्रिक होता है। उससे बच्चों में किसी अवधारणा के प्रति कोई ठोस समझ नहीं बन पाती। उदाहरण के लिए अगर हम बच्चों को फलों–सब्जियों के बारे में बता रहे हैं तो इसके अर्न्तगत मॅुहजवानी के बजाय अगर हम उनसे ये चीजे मिट्‌टी से बनवायें या चित्रों का प्रयोग करके बतायें तो उन्हें सीखने में ज्यादा सहायता मिलेगी। इसी तरह से जब हम पहली कक्षा में बच्चों को केवल बोलकर 1, 2 .... गिनतियॉ सिखा रहे हैं तो यहॉ पर बच्चा रटकर गिनती तो सीख जायेगा लेकिन इससे बच्चों में अंकों की कोई ठोस समझ शायद ही बन पाये। इसी अवधारणा को अगर हम बच्चों के साथ कंकड़ या मिट्‌टी की गोलियॉ बनवाकर उससे गिनवायें तो बच्चों में अंकों के प्रति एक ठोस समझ बनेगी। क्योंकि बच्चा अंकों को ठोस वस्तुओं के साथ सम्बंध बनाते हुए सीखेगा। इसे हम अनुभवों द्वारा सीखना कह सकते हैं। बच्चों को सिखाने की चीजों जैसे कंकड़, मिट्‌टी की गोलियॉ, चित्र आदि को हम शिक्षा की भाषा में शिक्षण–सामग्री कहते हैं।

बच्चे मिट्‌टी की बहुत सी आकृतियॉ बना सकते हैं। जिन्हें अध्यापक अपने शिक्षण में उपयोग खूबसूरती से कर सकते हैं। इसके अलावा घर में खाली पड़े माचिस के डिब्बों, डिब्बों के ढक्कन, रद्‌दी कागजों आदि का प्रयोग करके बच्चे बहुत सारी चीजें बना सकते हैं। केवल बच्चों को इस तरह के मौके देने की

जरूरत है। पुराने कैलेन्डरों का प्रयोग करते हुए बच्चों से गणित की बहुत सारी गतिविधियॉ करवा सकते हैं। इसी तरह से पुरानी बाल–पत्रिकाओं तथा दैनिक अखबारों में प्रकाशित बच्चों की कहानियों–कविताओं, पहेलियों आदि का प्रयोग, भाषा सिखाते समय किया जा सकता है। इसी तरह अध्यापक भी अपने स्कूल व उसके आसपास के परिवेश में उपलब्ध ढेर सारी वस्तुओं को कक्षा में शिक्षण कार्य में उपयोग के बारे में सोचते हुए नये–नये प्रयोग कर सकते हैं। जिससे बच्चों का शिक्षण रूचिपूर्ण बन सके। इसके अलावा स्कूलों में आने वाले अधिकतर बच्चों के माता–पिता किसी–न–किसी हस्त कार्य के जानकार होते हैं। उनसे भी इस कार्य में मदद ली जा सकती है। जिससे स्कूल में समुदाय की भागीदारी भी बढ़ती है।

निर्देश :

- ☞ उपरोक्त चर्चा के उपरान्त प्रतिभागियों को चार या पांच छोटे समूह में विभक्त करें। प्रत्येक समूह को भाषा एवं गणित शिक्षण हेतु पांच–पांच शिक्षण सामाग्री निर्माण करने को कहें।
- ☞ प्रशिक्षक नमूने के रूप में पहले निर्मित कुछ शिक्षण सामग्रियों का प्रदर्शन करें एवं इसके निर्माण की विधि से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

भोजनोपरान्त सत्र

- शिक्षण सामग्री के निर्माण के उपरान्त प्रत्येक समूह को उनके द्वारा निर्मित शिक्षण सामग्रियों को प्रदर्शित करने को कहें।

सुझाव :

विभिन्न प्रकार के शिक्षण सामग्रियों के निर्माण हेतु निम्नलिखित पुस्तकों की मदद ली जा सकती है।

क्रिया कलापों से बाल–शिक्षण. प्रकाशक – ओरियंट लाग्मैन, खिलौनों का बस्ता. प्रकाशक – एकलव्य, कबाड़ से जुगाड. प्रकाशक – एकलव्य, लिटिल टव्यॉज. प्रकाशक – नेशनल बुक ट्स्ट इंडिया, खेल–खेल में. प्रकाशक – एकलव्य, लो कास्ट, नो कास्ट टीचिंग ऐड. प्रकाशक – नेशनल बुक ट्स्ट इंडिया।

- ⇒ **रात्रि कार्य – शिक्षण सामग्री निर्माण**
- ⇒ **पुनरावृति**
- ⇒ **मिजाजोमीटर**

तेरहवॉ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण
⇒ रात्रि कार्य प्रस्तुतिकरण

विषय : *रोचक शिक्षण विधाओं एवं निर्मित शिक्षण सामग्री के आधार पर अभ्यास निर्माण प्रस्तुतिकरण।*

उद्देश्य :

- परिचित करायी गयी विविध रोचक शिक्षण विधाओं के आधार पर अभ्यास का निर्माण कर उनके प्रयोग में प्रतिभागियों को दक्ष बनाना।

विधि :

- प्रतिभागियों को चार–पॉच छोटे समूहों में बाट दें।
- समूहों को अलग–अलग विद्याओं पर अभ्यास निर्माण करने को कहें।
- समूह अभ्यासों को बड़े समूह में प्रस्तुत करें।
- प्रस्तुतिकरण का ढंग एक कक्षा को पढ़ाने जैसा हो।

निर्देश :

☞ प्रतिभागियों को अभ्यास निर्माण के लिए एक घण्टे का समय दें।
☞ आवश्यक सामग्री (चार्ट, स्केचपेन आदि) उपलब्ध करा दें।
☞ प्रत्येक समूह द्वारा प्रस्तुतिकरण के बाद उस पर व्यापक चर्चा करायें।
☞ प्रस्तुतिकरण में उन प्रतिभागियों को शिक्षण कराने के लिए प्रोत्साहित करें जिनमें अभी भी झिझक बाकी है।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *रोचक शिक्षण पर पाठ निर्माण एवं अभ्यास*

उद्‌देश्य :

- शिक्षण कार्य में प्रतिभागियों को दक्ष बनाना।
- भोजनपूर्व के शेप समूह का पाठ प्रदर्शन कराना।

विधि :

- पूर्व में रोचक शिक्षण विद्याओं के लिए अपनायी गई प्रक्रियाओं को अपनायें।

विषय : *केन्द्र संचालन के सहयोगी*

उद्‌देश्य :

- वैकल्पिक केन्द्रों के संचालन में मददगार लोगों की पहचान करना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा।

निर्देश :

☞ चर्चा में प्रत्येक प्रतिभागी को बोलने का अवसर दें।
☞ चर्चा में उभरे बिन्दुओं को श्यामपट्‌ट पर लिखते रहें। किसी एक प्रतिभागी को बुलाकर चर्चा में उभरें बिन्दुओं को श्यामपट्‌ट पर लिखने को कहा जा सकता है।
☞ प्रशिक्षक/अभिप्रेरक चर्चा में उभरे बिन्दुओं को कमवार डीब्रीफ करें।

निप्कर्ष :

- समुदाय

- परियोजना
- प्रशासन

⇒ **रात्रि कार्य – समुदाय से केन्द्र संचालन में सहयोग लेने के कम में आने वाली बाधाओं की सूची तैयार करें।**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

चौदहवाँ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण
⇒ रात्रि कार्य प्रस्तुतिकरण

विषय : *केन्द्र संचालन समुदाय की भूमिका*

उद्देश्य :

- वैकल्पिक विद्यालयों के संचालन में समुदाय की भूमिका से अवगत कराना।

विधि :

- छोटे समूह में चर्चा।
- प्रतिभागियों को 4/5 छोटे समूहों में विभक्त करें।
- ''केन्द्र संचालन में समुदाय की भूमिका'' विषय पर छोटे समूहों को चर्चा करने को कहें।
- चर्चा के लिए 45 मिनट का समय निर्धारित करें।
- चर्चा उपरान्त उभरे बिन्दुओं को चार्ट पेपर पर लिखने को कहें एवं प्रस्तुतिकरण करायें।
- मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर लिखें एवं डीब्रिफींग करें।

निष्कर्ष :

- विद्यालय के लिए स्थान उपलब्ध कराना।
- विद्यालय की मूल भूत सुविधाओं को जुटाने में सहयोग।
- नियमित बैठकों द्वारा विद्यालय की प्रगति में निरन्तर मदद।
- विद्यालय के वास्तविक अभिभावक।

विषय : *केन्द्र प्रबन्धन/संचालन*

उद्देश्य :

- केन्द्र संचालन से सम्बंधित प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा।
- केन्द्र संचालन से सम्बंधित प्रतिभागियों की शंकाओं के समाधान हेतु परियोजना से जुड़े पदाधिकारी (कार्यक्रम समन्वयक) उपलब्ध रहे और प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान करें।
- सम्बंधित पदाधिकारी सयंमपूर्वक सौहार्दय पूर्ण वातावरण में प्रतिभागियों से केन्द्र संचालन सम्बंधित बातों पर चर्चा करें।

नोट :

- केन्द्र संचालन की समय सारणी से प्रतिभागियों को अवगत करायें।
- केन्द्र को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु विभिन्न प्रकार के रजिस्टर या दैनिक बही यथा उपस्थिति बही, बच्चों की मूल्यांकन बही आदि के रखरखाव से सम्बंधित बिन्दुओं से प्रतिभागियों को अवगत करायें।

भोजनोपरान्त सत्र

विषय : *खुला सत्र*

उद्देश्य :

- प्रशिक्षण सत्रों के दौरान चर्चा की गई विषयों पर प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान करना।

विधि :

- प्रतिभागियों को विगत दिनों की चर्चाओं एवं गतिविधियों का पुनरावलोकन करने को कहें।

- प्रतिभागियों को अपनी कॉपी/नोटबुक को ध्यान पूर्वक देखनें को कहें और उनसे कहें कि यदि किसी विषय अथवा गतिविधि पर कोई प्रश्न या शंका है तो वे पूछ सकते हैं।
- प्रशिक्षक एक बार विगत दिनों की चर्चाओं का संक्षेपण कर दें ताकि प्रतिभागियों को प्रश्न पूछने में आसानी हो।
- किसी प्रतिभागी द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर सर्वप्रथम शेप प्रतिभागियों में से किसी को उस प्रश्न का उत्तर देने को कहें।
- यदि किसी प्रतिभागी द्वारा उत्तर दिया जाता है और वह अस्पप्ट हो या प्रश्नकर्ता उत्तर से असंतुप्ट दिखे तो प्रशिक्षक उस प्रश्न पर विस्तार से चर्चा करें।

⇒ **रात्रि कार्य – विगत चौदह दिनों में प्रशिक्षण के दौरान आपने कैसा महसूस किया। लिखें।**

⇒ **पुनरावृति**

⇒ **मिजाजोमीटर**

पंद्रहवाँ दिन

भोजनपूर्व सत्र

⇒ गीत
⇒ प्रतिवेदन प्रस्तुतिकरण
⇒ रात्रि कार्य प्रस्तुतिकरण

विषय : *कार्य योजना निर्माण*

उद्देश्य :

- प्रशिक्षण उपरान्त केन्द्र संचालन से सम्बंधित मासिक योजना का निर्माण प्रतिभागियों से कराना।

सामग्री :

- सादे पन्ने एवं कार्बन पेपर प्रत्येक प्रतिभागी के लिए।

विधि :

- सभी प्रतिभागियों को एक–एक सादा कागज एवं कार्बन पेपर दे दें।
- यह स्पष्ट कर दें कि प्रशिक्षण के बाद वे अपने कार्य क्षेत्र में प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त जानकारियों तथा तरीकों को किस प्रकार उतारेंगे, इसकी योजना बनायें।
- योजना निर्माण में सहायता हेतु निम्नलिखित प्रपत्र को श्यामपट्ट पर बना दें एवं प्रतिभागियों को उसके आधार पर योजना बनाने को कहें।

नाम –　　　　　　　　गॉव –　　　　　　　　माह –

सप्ताह	**केन्द्र सम्बंधित**	**वातावरण निर्माण/सामुदायिक सहभागिता सम्बंधित**
प्रथम सप्ताह		
द्वितीय सप्ताह		
तृतीय सप्ताह		
चतुर्थ सप्ताह		

विषय : *प्रशिक्षण-मूल्यांकन*

उद्देश्य :

- प्रशिक्षण के प्रभाव/उपयोगिता को जांचना।
- प्रतिभागी प्रशिक्षण से कितना संतुप्ट हैं, इसका पता लगाना।
- प्रेरक/प्रशिक्षक को फीडबैक उपलब्ध कराना।
- प्रशिक्षण को भविषय में और प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्राप्त करना।

विधि :

- दस दिवसीय प्रशिक्षण काल के दौरान चर्चा किये गए विषयों को लेकर एक फार्मेट अथवा वैकल्पिक उत्तर प्रश्नावली बना लें।

मूल्यांकन प्रपत्र का प्रारूप

विषय	**बहुत अच्छा**	**अच्छा**	**साधारण**	**खराब**	**बहुत खराब**
संख्या खेल					
जोड़े में परिचय					
शिक्षा क्या एवं क्यों					

- प्रत्येक प्रतिभागियों को एक–एक फार्मेट/प्रश्नावली उपलब्ध करायें।

- प्रतिभागियों को प्रत्येक विषय के आगे उनके अनुभवानुसार ( ) का चिन्ह लगाने को कहें।
- फारमेट में प्रशिक्षण सम्बंधी दो अच्छी बाते और दो बुरी बातें प्रतिभागियों को लिखने को कहें।
- फारमेट में प्रशिक्षकों के सम्बंध में संक्षेप में लिखने को कहें।
- प्रशिक्षण में सुधार हेतु अपने सुझाव लिखने के लिए भी प्रतिभागियों को कहें।

विषय : *मिजाजो मीटर पर चर्चा*

उद्देश्य :

- मिजाजो मीटर की उपयोगिता से प्रतिभागियों को अवगत कराना।
- प्रतिभागियों की सहभागिता के उतार–चढ़ाव की जानकारी देना।

विधि :

- बड़े समूह में चर्चा

विषय : *समापन सत्र*

उद्देश्य :

- समूह भावना को और सुदृढ़ करना।
- कार्यक्षेत्र में विशेष संवेदनशील बनाना।
- डी.पी.ई.पी. का अभिन्न अंग/महत्वपूर्ण सदस्य होने का अहसास कराना।

विधि : प्रथम चरण

- प्रतिभागियों में से कुछ से प्रशिक्षण के सम्बंध में मौखिक उद्गार व्यक्त करने को कहें।
- प्रशिक्षक दल के सदस्य भी संक्षेप में प्रशिक्षण के सम्बंध में अपना उद्गार व्यक्त करें।

द्वितीय चरण

- दीये में तेल–बाती लगाकर प्रशिक्षण कक्ष के फर्श पर रख दें।
- गोल आकार में सभी खड़े हो जायें।
- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को निम्नलिखित कहानी पूरे हाव–भाव के साथ सुनायें–

कहानी इस प्रकार है – एक घर में बिजली लगने से पूरा घर बल्व और ट्यूब की रोशनी से जगमगा उठता है और जिस दिये की रोशनी में उस परिवार का काम चलता था, उसे उठाकर एक अंधेरे कोठरी में फेंक दिया जाता है। काफी दिन बीत जाने पर, अचानक, एक दिन बिजली चली जाती है, तभी घर के बुजुर्ग को याद आता है कि कोठरी में एक दिया पड़ा हुआ है। उस दिये पर काफी धूल जम चुकी थी, उसे साफ कर और तेल बाती लगाकर जला दिया जाता है। थोड़ी देर बाद बिजली पुनः वापस आ जाती है और पूरा परिवार अपने कार्य में लग जाता है और दिया एक कमरे में जलती छूट जाती है। पूरा घर फिर से जगमगा उठता है। तभी बल्व, ट्यूब, ठहाका लगाते हुए दिये से कहते हैं ''अरे ओ दिये हमारे आगे तुम्हारी क्या हस्ती है। तुम कुछ भी नहीं, तुममें कुछ भी नहीं है। हमारे सामने तुम्हारी रोशनी फीकी पड़ जाती है और हमारे रोशनी से देखों, घर किस तरह जगमग कर रहा है? तुममें कोई शक्ति है?''

''इस अहंकार भरे शब्दों को सुन दिया निराश और दुःखी हो जाती है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद दिया ट्यूब से कहती है ट्यूब भाई सचमुच सचमुच मैं बहुत छोटी हूं। तुम्हारी तरह घर को प्रकाशित करने की शक्ति मुझमें नहीं, पर एक काम जो मैं कर सकती हूं वो तुम कभी नहीं कर सकते। ट्यूब पूछता वो कौन सा काम है जो मैं नहीं कर सकता। दिया कहती है, ''मैं एक दिये से दूसरे दीये को जला सकती हूं पर क्या तुम ऐसा कर सकते हो, ...।''

यहां हम सभी इस दिये के रूप में हैं तो क्यों न हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हम सब इस शिक्षारूपी दिये को एक घर से दूसरे घर.................. में जलाएगें।

- कहानी के उपरान्त एक–एक कर सभी व्यक्ति दीये को लें और पुनः अपने स्थान को वापस जाए।
- एक दीया को जला लें और उससे दूसरे दीये को ज्वलित करें और फिर दूसरे से तीसरे को ....।
- दीये जलने की प्रक्रिया में जागृति गीत शुरू करें ''सौ में सत्तर आदमी'' या '' घर–घर में शिक्षा का दीप'' और अंत में ''हम होंगे कामयाब'' गीत गायें।

निर्देश :

☞ प्रतिभागियों से कहें कि दिया वापस फर्श पर रख दें और अपने–अपने स्थान पर बैठ जायें।

☞ प्रतिभागियों को विगत 15 दिनों का प्रशिक्षण प्रतिवेदन (प्रतिभागियों द्वारा लिखा गया) उपलब्ध करायें और प्रशिक्षण सत्र के समाप्ति की घोषणा करें।

✌ ✌ ✌ ✌ ✌ ✌ ✌

परिशिप्ट – १ पाठ्य कम

कक्षा – 1

भाषा

1. सुनना (बोध के साथ)

1.1.1 परिचित और प्रचलित बालगीत, कतिताएं तथा कहानियां समझते हुए सुनता है।
1.1.2 परिचित स्थिति में हुए वार्तालाप और संवाद समझते हुए सुनता है।
1.1.3 परिचित स्थिति में दिये गये मौखिक निर्देश, अनुरोध आदि का पालन करता है।

2. बोलना

2.1.1 संक्षिप्त मौखिक कथन में दी गयी सूचनाओं का प्रत्यास्मरण करता है।
2.1.2 सुने हुए कथन पर आधारित कौन, कब और कहां वाले प्रश्नों के उत्तर देता है।
2.1.3 सरल वाक्यों को सही ढंग से दोहराता हैं
2.1.4 सरल बाल गीत, कविताएं और गीत समूह में उचित हावभाव और मुद्रा के साथ सुनाता हैं
2.1.5 सुने हुए कथन पर आधारित सरल प्रश्न पूछता है।
2.1.6 शिप्टाचार के साथ बोलता है।

3. पढ़ना (अर्थबोध के साथ)

3.1.1 वर्णमाला के वर्णो को वर्णसमूहों में और अलग–अलग पहचानता है।
3.1.2 श्यामपट्ट पर लिखी या फ्लैश कार्ड पर बड़े आकार में छपी हुई या हस्तलिखित सामग्री को पढ़ता है।
3.1.3 सरल परिचित शब्दों का सस्वर पाठ करता है। (तीन वर्णो से बने)
3.1.4 अर्थबोध के साथ लगभग 1500 शब्दों को पढ़ने की दक्षता अर्जित करता है।

4. लिखना

4.1.1 स्वर, व्यंजन और मात्रायुक्त व्यंजन तथा सीखे हुए संयुक्ताक्षर का अनुलेखन करता है।

4.1.2 स्वरों, व्यंजनों और मात्रायुक्त व्यंजनों का श्रुतलेखन करता है।

4.1.3 निर्देशानुसार सरल परिचित शब्द और वाक्य लिखता है।

4.1.4 शब्दों की अन्तिम ध्वनि की समानता को पहचानता है और ऐसे शब्दों के जोड़े लिखता है।

निर्देश :

☞ कक्षा – 2, 3, 4 एवं 5 के पाठ्यक्रम को प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ायी जाने वाली भाषा की पुस्तिका ''ज्ञान भारती'' में देखा जा सकता है।

गणित

1. संख्याओं एवं संख्यांकों को समझना।

1.1.1 शिक्षार्थी वस्तुओं तथा चित्रों की सहायता से 1 से 20 तक गिनता है।

1.1.2 शिक्षार्थी वस्तुओं तथा चित्रों की सहायता से 1 से 9 तक के संख्यांकों का मिलान सम्बन्धित वस्तुओं के समूह से करता है तथा विलोम।

1.1.3 शिक्षार्थी शून्य '0' को कुछ नहीं होने अथवा समूह में वस्तुओं के न होने के रूप में जानता है।

1.1.4 शिक्षार्थी 10 से 20 तक के संख्यांकों का विस्तारित रूप 10, 10 और 1 ग्यारह, 10 और 2 बारह आदि के रूप में बोल कर व्यक्त करता है।

1.1.5 शिक्षार्थी 10 से 20 तक के संख्यांकों का इकाई और दहाई में विस्तार करके उनके स्थानीय मान की समझ प्रदर्शित करता है।

1.1.6 शिक्षार्थी 1 से 100 तक की संख्याओं को समझता है और इन संख्याओं के संगत संख्यांकों को लिखता है।

1.1.7 शिक्षार्थी 1 से 100 तक की संख्याओं को आरोही तथा अवरोही क्रम में प्रदर्शित करता है।

1.1.8 शिक्षार्थी 1 से 100 तक की संख्याओं में से किसी संख्या के पहले तथा बाद की संख्याओं को जानता है और दो दी हुई संख्याओं के बीच की संख्याओं को बताता है।

1.1.9 शिक्षार्थी 1 से 100 तक की अधिकतम पांच संख्याओं में से सबसे छोटी या बराबर एक अंक की संख्या पहचानता है।

1.1.10 शिक्षार्थी 1 से 100 तक की अधिकतम पांच संख्याओं को आरोही तथा अवरोही क्रम में व्यवस्थित करता है।

2. संख्याओं के जोड़ने, घटाने, गुणा व भाग करने की मौलिक संक्रियाएं।

2.1.1 शिक्षार्थी एक अंक की दो संख्याओं को वस्तुओं की सहायता से जोड़ता है और इस जोड़ को '+' तथा (=) के चिह्नों की सहायता से योग तथ्य के रूप में व्यक्त करता है।

2.1.2 शिक्षार्थी 0 से 18 तक की दो संख्याओं में बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने की संक्रिया करता है और इस संक्रिया को '–' तथा (=) के चिह्नों की सहायता से व्यक्त करता है।

2.1.3 शिक्षार्थी जोड़ने और घटाने की संक्रियाओं द्वारा दैनिक जीवन की समस्याओं को मौखिक रूप से हल करता है।

3. मुद्रा, लम्बाई, मात्रा, धारिता एवं समय का मापन।

3.1.1 शिक्षार्थी अन्तर्राप्ट्रीय अंकों को पहचानता है।

3.1.2 शिक्षार्थी विभिन्न मूल्यों के सिक्के व नोट पहचानता है।

3.1.3 शिक्षार्थी अपने निकट परिवेश में विभिन्न वस्तुओं की लम्बाई नापने के लिए अमानक इकाईयों जैसे – हाथ, बालिस्त, कदम, छड़ी आदि का प्रयोग करता है।

3.1.4 शिक्षार्थी खेल–तराजू से दो वस्तुओं के द्रव्यमानों की तुलना तौलकर करता है।

3.1.5 शिक्षार्थी धारिता मापन के लिए अमानक इकाईयों जेसे – प्याला, गिलास, लोटा आदि का प्रयोग करता है।

3.1.6 शिक्षार्थी सप्ताह के दिनों के नाम क्रमानुसार बताता है।

4. ज्यामितीय आकृतियां

4.1.1 शिक्षार्थी चार मौलिक आकृतियों – वृत, त्रिभुज, आयत और वर्ग को नाम सहित पहचानता है।

4.1.2 शिक्षार्थी चार मौलिक आकृतियों – वृत, त्रिभुज, आयत और वर्ग को समझ के साथ हाथ बनाता है।

परिशिष्ट – २

प्रशिक्षण सामग्री

नोट बुक	प्रत्येक प्रतिभागी को पहले एक – एक तथा भर जाने के बाद दूसरी दी जाये।
पेन	प्रत्येक को एक–एक दी जाये।
पेन्सिल, रबर, शार्पनर	आवश्यतानुसार समूह कार्य हेतु
कागज रिम	3
स्केल	5
पानी के रंग	3 डिब्बी
मोम रंग	5 डिब्बी
चार्ट पेपर	आवश्यकतानुसार
स्केच पेन	आवश्यकतानुसार
रीफिल	3 सेट
चाक	आवश्यकतानुसार
गोंद	आवश्यतानुसार
सेलोटेप	2 रोल मीडियम (आवश्यकतानुसार)
स्टेपलर	2
पंचिंग मशीन	1
कैंचियां	10
पेपर कटर	2
रंगीन कागज	आवश्यतानुसार

बच्चों के लिए खेल

(6-11 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए)

बोल भाई कितने?

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को गोलाई में खड़ा कराएंगे। समूह से कोई बच्चा या शिक्षक/शिक्षिका बीच में आकर ताली बजाएंगें एवं अन्य सभी बच्चे वृत में चलना शुरू करेंगे। बीच में खड़ा बच्चा पूछेगा ''कितना भाई कितना'' उस के जवाब में समूह में खड़े बच्चे बोलेंगे ''जितना बोल उतना''। तब बीच में खड़ा बच्चा बोलेगा दो या तीन या चार या .... और इसी संख्या के अनुसार वृत में घूम रहे बच्चे तुरन्त उप समूह बनाएंगे। इसी तरह, खेल खेला जाता है और बच्चों को उत्साहित किया जाता है।

मुखिया ने कहा

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को गोलाई में खड़ा कराएंगे। समूह से कोई बच्चा बीच में आकर मुखिया की भूमिका निभाएगा। वह बोलेगा ''मुखिया ने कहा–चलो'' इस पर अन्य बच्चे वृत में चलना ृशुरू करेंगे। फिर वह ''मुखिया ने कहा'' शब्द का उच्चारण न कर सिर्फ वह बोलेगा ''बैठो'' और इस पर कोई बच्चा बैठ जाता है तो वह समूह के बीच में जाएगा और अन्य लोगों के निर्णय के अनुसार जैसे पशु या गाड़ी के समान चल कर या स्वर कर बच्चों को हंसाएगा। इसके बाद वह बच्चा मुखिया बन कर खेल खेलाएगा।

लंगड़ा लकड़बग्घा

शिक्षक/शिक्षिका मैदान में एक बड़े आकार का वर्ग बनाएंगे। सभी बच्चों को दो दल में बराबर की संख्या में बांटा जाएगा। वर्ग के बाहर जो दल खड़ा जोगा वह लंगड़ा लकड़बग्घा कहलाएगा तथा जो दल अन्दर खड़ा होगा वह बकरी कहलाएगा। बाहर खड़े सभी बच्चों को गिनती के क्रमानुसार एक, दो, तीन, चार पांच ....नाम दिया जाएगा। जब शिक्षक/शिक्षिका किसी भी संख्या से नामित बच्चा को बुलाएंगे तो वह बच्चा लंगड़ाते हुए वर्ग के अन्दर आएगा और वर्ग में खड़े बच्चों को छूने का प्रयास करेगा। इस क्रम में वह जितना बच्चा को छूता है वे सभी खेल से बाहर बैठेंगे।
जो बच्चा लंगड़ा लकड़बग्घा बना है यदि छूने के क्रम में वह अपने लंगड़े पैर को जमीन से सटा देता है तो वह खेल से बाहर जो जाएगा यदि छूने में असफल होता है

तो वह लौटकर अपने स्थान पर जा सकता है। इस प्रकार शिक्षक/शिक्षिका अन्य संख्या बोलकर दूसरे बच्चों को खेलने का अवसर देंगे।

जब लंगड़ा लकड़बग्घा बने दल के सभी बच्चे, बकरी बने सभी बच्चों को छूने में सफल होते हैं तब पुनः खेल को जारी रखने हेतु बकरी बने बच्चों को लंगड़ा लकड़बग्घा एवं लंगड़ा लकड़बगघा बने बच्चों को बकरी मानकर खेल खेला जाएगा।

दही चूड़ा खावो

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को बराबर की संख्या में दो दल में बाटेंगे। दोनों दल के प्रत्येक बच्चा एक दूसरे के आमने सामने कुछ फासले पर खड़ाा होगें। शिक्षक/शिक्षिक बच्चों को खेल का नियम बतलाएंगे। ''दही'' बोलने से दोनों दल के सभी बच्चे दाहिने पैर को आगे बढ़ाएंगे। ''चूड़ा'' बोलने से झुककर दोनों हाथ आगे की ओर बढ़ाकर दौड़ने के लिए तैयार होगें एवं ''खावो'' बोलते रहेंगे तो सभी बच्चे तदनुसार स्थान बदलते रहेंगे। जो बच्चा इस कार्य करने में गलती करेगा वह दल से बाहर बैठेगा और इसी प्रकार खेल जारी रहेगा।

मिटटी पानी

शिक्षक/शिक्षिका विद्यालय के कमरे में या मैदान में एक बड़े आकार का वृत के उपर सभी बच्चों को खड़ा कराएगें। वृत के अन्दर का क्षेत्र ''पानी'' तथा बाहर का क्षेत्र ''मिटटी'' माना जाएगा। जब शिक्षक/शिक्षिका या कोई बच्चा दल का नेता बनकर ''पानी'' बोलेगा तो अन्य सभी बच्चे वृत के अन्दर कूद कर जाएंगे एवं उसी प्रकार ''मिटटी'' बोलने से वृत के बाहर जाएंगे। इस कम में यह ध्यान देना होगा कि कोई वृत के उपर न कूदे। इस अभ्यास को कराने के बाद शिक्षक/शिक्षिका बतलाएंगे कि अब मिटटी बोलने के बजाय मिटटी पर रहने वाले जीव, जन्तु, जानवर जैसे हाथी, भालू, मुर्गा, घोड़ा, आदमी का नाम बोला जाएगा एवं उसी तरह पानी के बजाय पानी में रहने वाले जन्तु जैसे मछली, जल हाथी, मगरमच्छ, कछुआ, घड़ियाल, गेंडा आदि का नाम बोला जाएगा और उसी के अनुसार वृत के बाहर (मिटटी) एक अन्दर (पानी) कूद–कूद कर खेल खेलाएंगे। जो बच्चा बोलने के अनुसार वृत के अन्दर एवं बाहर कूदने में गलती करेगा वह दल से बाहर निकल कर बैठेगा एवं ताली बजा बजाकर अन्य बच्चों को उत्साहित करेगा।

कृषक एवं खरगोश

शिक्षक/शिक्षिका बराबर की संख्या में बच्चों को दो दलों में बांटेंगे। प्रथम दल – प्रथम दल के सभी बच्चे दो–दो को जोड़ी बनाएंगे। जोड़ी बनने के बाद

आमने–सामने खड़े होकर दोनों बच्चे अपना हाथ बढ़ाकर एक दूसरे को पकड़ेंगे। इसी प्रकार सभी जोड़ी एक दूसरे को पकड़ कर खड़ा होंगें और पुल जैसा संरचना तैयार करेंगे। प्रत्येक जोड़ी का अन्तराल एक दूसरे से 2 फुट का होगा ताकि यह जोड़ी कृषक का जोड़ी कहलाएगा।

द्वितीय दल – द्वितीय दल के बच्चे एक धारी में खड़े होगें तथा यह दल खरगोश का दल कहलाएगा। शिक्षक/शिक्षिका ताली बजाना शुरू करेंगे और ताली के अनुसार खरगोश दल के बच्चे, प्रथम दल द्वारा बनाये गये पुल में बारी–बारी से झुक कर पार करेंगे। जैसे ही ताली बजाना बन्द होगा वैसे ही प्रथम दल पार कर रहे खरगोश दल के बच्चे को पकड़ लेंगे। शिक्षक/शिक्षिका किसी भी समय ताली बजाना बन्द कर सकते हैं। जो बच्चा पकड़ा जाएगा वह खेल से अलग बैठेगा और इसी प्रक्रिया से खेल जारी रहेगा। जब कृषक बने बच्चे खरगोश बने सभी बच्चों को पकड़ लेंगे तब पुनः खेल को जारी रखने हेतु प्रथम दल (कृषक का दल) खरगोश बनेगा तथा द्वितीय दल (खरगोश का दल) कृषक बनेगा।

मुर्गा लड़ाई

शिक्षक/शिक्षिका सभी बच्चों को दो–दो की जोड़ी बनाकर विद्यालय के मैदान में बने बालू गद्दा के पास ले जाएंगे। बालू गद्दा के उपर एक छोटा सा वृत बनाकर उसमें एक जोड़ी (दो बच्चे) को खड़ा करेंगे। दोनों बच्चे अपने–अपने बांए पैर को उपर की ओर मोड़कर बांए हाथ से पकड़ कर खड़ा होगें एवं दाहिने हाथ को बांए छाती पर रखकर केहुनी से एक दूसरे को धक्का देंगे। इस क्रम में यदि कोई वृत से बाहर निकल जाएगा या अपने बांए पैर को जमीन से सटा देगा तो वह जोड़ी खेल से बाहर हो जाएगा। इसी प्रकार अन्य जोड़ी को भी बारी–बारी से खेलने का अवसर दिया जाएगा।

हाथ जल गया – पकड़ो

सभी बच्चे वृताकार ढंग से खड़े होंगे। शिक्षक/शिक्षिका समूह से बच्चा को मुखिया बनाकर बीच में खड़ा कराएगें। रद्दी कागज, कपड़ा से तैयार किया गया गेंद या रबर की गेंद से खेल सकते हैं। उस गेंद को सभी बच्चे आग की संज्ञा देंगे। समूह का कोई एक बच्चा उसे हाथ में लेकर बीच में खड़े मुखिया को दिखलाते हुए बोलेगा

''हाथ जल गया, हाथ जल गया—पकड़ो''। जब गेंद को लेने के लिए मुखिया आएगा तब वह बच्चा उसे न देकर गोलाई में खड़े अन्य साथी को देगा। फिर उसी तरह दूसरा बच्चा मुखिया को दिखलाकर बोलेगा ''हाथ जल गया, हाथ जल गया—पकड़ो'' और फिर जब मुख्यिा गेंद लेने आएगा तब उसे गेंद न देकर तीसरे साथी को दे देगा। इसी तरह से खेल जारी रहेगा। यदि गेंद दूसरे बच्चे की तरफ फेंकते वक्त मुखिया गेंद का पकड़ लेगा या फेंकते हुए बच्चा को छू देगा तब वह बच्चा गोलाई के बीच में आएगा एवं मुखिया का स्थान लेगा तथा मुखिया बना बच्चा उसका स्थान लेगा।

मिठाई का खेल

बच्चे गोलाई में खड़े होगे। उनके बीच से एक बच्चा मिठाईवाला बनेगा और गोलाई के अन्दर खड़ा होगा। अन्दर खड़ा बच्चा गोलाई में खड़े अन्य किसी एक बच्चा के पास जाएगा और बोलेगा ''मिठाई लेगा''। तब वह बच्चा बोलेगा ''हां''। इसमें ध्यान दिया जाता है कि पहला बच्चा (मिठाईवाला) जिस आवाज, ढंग, स्वर में बोलेगा उसी आवाज एवं ढंग में दूसरा बच्चा हां बेलेगा। शर्त यह रहती है कि बोलते वक्त हंसना नहीं है, हां के सिवा दूसरा कुछ नहीं बोलना है एवं जवाब तुरन्त देना है। यदि इस शर्त को पालन करने में कोई बच्चा असमर्थ होता है तब वह बच्चा बीच में आकर उसका स्थान ग्रहण करता है। मिठाईवाला बच्चा बीच में आकर मिठाईवाला बच्चा गोलाई में आकर उसका स्थान ग्रहण करता है। मिठाईवाला बनता है और पहले बने मिठाईवाला बच्चा गोलाई में आकर उसका स्थान ग्रहण करता है। मिठाईवाला बच्चा को गोलाई में खड़े बच्चे से पूछने हेतु तीन बार अवसर दिया जाता है, यदि तीनों बार बच्चे के पूछने का ढंग, आवाज, स्वर का पालन अन्य बच्चे ठीक—ठीक कर पाते हैं तो मिठाईवाला बना बच्चा दल के निर्णयानुसार समूह के बीच आकर कुछ करके दिखलाना पड़ता है जैसे गाना गाना, नाचना, किसी पशु—पक्षी की बोली बोलना आदि।

पुनः खेल को जारी रखने हेतु वही बच्चा मिठाईवाला बनता है जिससे तीसरी बार पूछा जाता है। शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को विभिन्न तरह के स्वर, बोलने का ढंग, आवाज आदि का अभ्यास कराएंगे। शिक्षक भी बच्चों के साथ खेल में भाग लेगें ताकि बच्चों में हर्ष, उत्सुकता, आश्चर्य, क्रोध आदि भाव प्रकाशित होगा। जो सकारात्मक भाव, उसका विकास एवं जो नकारात्मक भाव है वह बच्चा त्याग कर सकेगा।

नोट : खेल संख्या 8 एवं 9 प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों के साथ करायें जा सकते हैं बाद बाकी खेल विद्यालय में बच्चों के साथ कराये जाए।

हाथी घोड़ा पालकी

इस खेल का नियम भी काफी हद तक कितने भाई कितने के सामन है। बस इसमें नारा बदल जाता है। खेल खिलाने वाला बीच में खड़ा होकर बोलता है ''हाथी घोड़ा पालकी'' तो बाकी सारे प्रतिभागी गोले में एक दिशा में घूमते हुए बोलते हैं ''जय कन्हैया लाल की'' लेकिन जेसे ही लेना अपना नारा बदल कर ''जय कन्हैया लाल की'' कहना शुरू करता है वैसे ही सारे प्रतिभागियों को ''हाथी घोड़ा पालकी'' का नारा लगाते हुए उल्टी दिशा में घुमना शुरू कर देना होता है।

नेता–नेता चाल बदल

सभी बच्चे एक गोल घेरे में बैठ जाते हैं। एक बच्चा गोले के बाहर होता है। उसे ऐसे स्थान पर खड़ा होना होता है, जहॉ से गोले की गतिविधियों को देखा नहीं जा सके। इस बीच गोले में जो बच्चे बैठे हैं, उनके पास एक छोटी–सी वस्तु, जो कुछ भी हो सकती है जैसे, रबड़, पेन्सिल, चाक आदि। अब इस वस्तु को किसी एक के पास रख देते हैं। वह उसे छुपा लेता है। वह इस तरह से छुपाता है कि किसी को यह वस्तु दिखाई न दे। अब सब बच्चे एक साथ बोलना शुरू करते हैं कि नेता–नेता चाल बदल। और नेता यानि जिसके पास चीज छुपी है वह कोई भी क्रिया करता है जैसे तरह–तरह से ताली बजाना, बाल खुजलाना, नकल उतारना आदि। सभी बच्चे उसके साथ–साथ करते हैं। पर सभी को वही क्रिया करनी है जो नेता कर रहा है। गोले में खड़े बच्चे को अन्य बच्चों की क्रिया या उनके हाव भाव देखकर यह बताना है कि वस्तु किसके पास छुपी है? अगर वह सही बता देता है तो वस्तु छिपाने वाले बच्चे को बाहर जाना पड़ता है। गोले में खड़े बच्चे को तीन मौके मिलते हैं। अगर वह तीन मौके में नहीं बता पाता तो बाकी बच्चे जो कहेंगे वह उसे करना पड़ता है जैसे – गाना सुनाओ, नाच दिखाओ, नाई का अभिनय करो आदि। इसके बाद कोई दूसरा बच्चा बाहर जाता है।

शीशा

सबसे पहले सभी बच्चों को गोला बनवाकर बैठने को कहा जायेगा। इसके बाद दो–दो बच्चों के जोड़े बनवाये जायेंगे। फिर एक जोड़ा यह खेल–खेलेगा। बाकी जोड़े वाले बच्चे इन्हें देखेंगे।

जोड़े वाले बच्चों में एक को शीशा बना दिया जायेगा। अब दूसरा बच्चा तरह–तरह के हाव–भाव जैसे – बालों में कंघा करना, छींकना, हॅसना, रोना, कपड़े ठीक करना आदि जैसे हाव–भाव करेगा। शीशा बना बच्चा भी दूसरे बच्चें की नकल करेगा, ठीक वैसे ही जेसे कि शीशे में होता है। दूसरी बार में शीशा दूसरा बच्चा बन सकता है।

वह पहले बच्चे के हाव–भाव की नकल करेगा। इस तरह सभी जोड़े वाले बच्चे बारी–बारी से यह खेल, खेल सकते हैं।

चिड़िया फुर्र

सभी बच्चों को गोला बनवाकर बिठा दिया जाता है। फिर शिक्षक कहता है कि जब मैं बोलूँगा चिड़िया फुर्र तो आप उड़ने वाले पक्षियों की तरह अपने हाथों को हिलायेंगे। तब शिक्षक पक्षियों के नाम लेना शुरू करता है जैसे – चिड़िया फुर्र, कौआ फुर्र, तोता फुर्र आदि तो बच्चे पक्षियों की तरह अपने हाथों को पंखों के रूप में हिलाते हैं। अब यदि शिक्षक उसी के स्थान पर पशुओं का नाम लेता है तो बच्चों को पक्षियों की तरह अपने हाथों को नहीं हिलाना है। जो बच्चा पशुओं के नाम लेने पर अपने हाथ हिलाता है तो वह 'आउट' माना जाता है।

तोता कहता है

सभी बच्चों को गोल घेरे में खड़ा कर दिया जाता है। बाद में बच्चों को समझााया जाता है कि तोते के आदेश का पालन करना है। अर्थात तोता कहेगा वैसा ही करना है। इस खेल में जो बच्चों को खिलाता है, वहीं तोता होता है जैसे – तोता कहता है, 'हॅसों' तो सबको हॅसना है। तोता कहता है, बैठ जाओं तो सब को बैठ जाना है। और अगर केवल यह कहा जाये कि 'खड़े जो जाओ' तो सब को खड़े नहीं होना है क्योंकि तोते ने नहीं कहा। अतः इस खेल में यह ध्यान रखना है कि जिस काम के लिए तोते ने कहा है उसे ही करना है और किसी काम को नहीं। जो बिना तोते के कहे वाला काम करेगा वह 'आउट' माना जायेगा।

वस्तु का इस्तेमाल

सभी बच्चों को एक गोले में बैठवाया जायेगा और उन्हें कोई एक वस्तु के उसके काम के अलावा भिन्न–भिन्न इस्तेमाल सुझाने जैसे पेन का कुछ इस्तेमाल करके दिखाना है (लेकिन पेन लिखने के काम में नहीं इस्तेमाल करना है।) हर बच्चे को अलग चीज बनानी है और कोई चीज दोहराई नहीं जानी चाहिए। अगर बच्चे में उत्साह बनता हे तो दुबारा भी करवा सकते हैं या दूसरी बार में दूसरी वस्तु जैसे किताब दी जा सकती है।

कोड़ा जमाल शाही

भाग लेने वाले सभी बच्चे एक घेरा बनाकर बैठ जाते हैं। एक बच्चा घेरे के बाहर की ओर चक्कर लगाता है और चुपके से कपड़े को किसी एक बच्चे के पीछे डाल देता है। यह करने के बाद वह एक पूरा चक्कर लगाता है और कपड़ा उठाकर उस बच्चे को मारने लगता है जिसके पीछे कपड़ा गिराया था। अगर ये दूसरा बच्चा अपने पीछे गिरे हुये कपड़े को देख लेता है तो वह उसे उठाकर पहले वाले बच्चे के पीछे चक्कर में भागने लगता है। पहला बच्चा खाली स्थान देखकर बैठ जाता है। दूसरा व्यक्ति जो कपड़ा लिए हुए उसके पीछे आ रहा है दूबारा से उसी क्रम को शुरू करता है।

शेर और लोमड़ी

सभी भाग लेने वाले बच्चे एक घेरे में बैठ जाते हैं। इसके बाद एक बच्चा बीच में होता है। वह घेरे में से किसी एक बच्चे के पास जाकर 'शेर' या 'लोमड़ी' का संकेत करता है। शेर का संकेत है जोर से 'हाहू' बोलना और लोमड़ी का संकेत है 'दोनों हाथों को कान के उपर लाकर आगे–पीछे हिलाना'। अगर शेर का संकेत है तो दूसरे बच्चे को बन्दूक के साथ प्रतिक्रिया देनी है और लोमड़ी का संकेत है तो दूसरे बच्चे को उसे 'ह–र–र–र' करके भगा देने की प्रतिक्रिया करनी है। तब बीच में खड़े बच्चे को घेरे में 'शेर' और 'लोमड़ी' के संकेत देते हुए घूमना है जब तक कि कोई गलत प्रतिक्रिया देने वाला बच्चा बीच में आकर न खड़ा हो जाये। ऐसा होने पर पहला बच्चा घेरे में बैठ जाता है।

प्रशिक्षणार्थियों के लिए खेल

निम्नलिखित खेल प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों के साथ करायें जा सकते हैं, साथ ही शिक्षकों को विद्यालय में बच्चों के साथ इन खेलाों को कराने को कहें।

छोटा–घड़ा, बड़ा–घड़ा

सभी प्रतिभागी गोलाई में खड़े हो जाएंगे तथा बीच में एक व्यक्ति रहेंगे। बीच वाले व्यक्ति गोलाई में खड़े किसी भी व्यक्ति से जाकर छोटा घड़ा कहेंगे परन्तु हाथ से ईशारा बड़ा घड़ा का करेंगे, इसके उत्तर में वह व्यक्ति (जिनसे छोटा घड़ा कहा गया है) बड़ा घड़ा कहेंगे परन्तु हाथ से ईशारा छोटा घड़ा का करेंगे। विपरीत उत्तर देने और हाथ से ईशारा करने में यदि प्रतिभागी से गलती होती है तो वह चोर बन जाएंगे और पहले से चोर बने व्यक्ति उस व्यक्ति का स्थान ले लेंगें। इस बार चोर बने

व्यक्ति पुनः उसी क्रम को चालू रखेंगे। यदि कोई भी प्रतिभागी लगातार तीन बार चोर बने रहते हैं तो समूह उन्हें पारितोपिक रूपी कोई दण्ड यथा – नाचना, गाना, चुटकुले सुनाना आदि दे सकते हैं।

नोट : चोर बने व्यक्ति बड़ा घड़ा या छोटा घड़ा दोनों में से कोई भी प्रश्न पहले पूछ सकते हैं।

हॉ–ना

सभी प्रतिभागी गोलाई में खड़े रहेंगे तथा बीच में एक व्यक्ति रहेंगे। बीच वाला व्यक्ति गोलाई में खड़े व्यक्ति से कोई भी प्रश्न जैसे – आप चश्मा पहने हैं? आपके पास कलम हैं? इत्यादि पूछेंगे। प्रश्न पूछे गए व्यक्ति के पास यदि वे सारी वस्तुएं है तो उन्हें ''हां'' कहना है परन्तु सर से ईशारा ''न'' का करना होगा। इसी तरह यदि प्रश्न पूछे गए व्यक्ति के पास वे वस्तुएं नहीं हो तो उन्हें ''हां'' में ईशारा ''हां'' का तथा ''न'' में ईशारा ''न'' का करते हैं तो वे चोर बन जाएगें और प्रश्न पूछने की प्रक्रिया अब वो दुहराएंगें। यदि चोर बने प्रतिभागी तीन बार लगातार गलती करते हैं तो समूह जो भी दण्ड यथा – नाचना, गाना, हंसना, रोना इत्यादि कहेगा वह उन्हें मान्य होगा। दण्ड पूरा करने वाले व्यक्ति आखिरी बार जिनसे प्रश्न पूछे थे अब वो चोर बनेंगे और इस प्रकार खेल का क्रम जारी रहेगा।

रिंग–रिंग

सभी प्रतिभागी गोलाई मे खड़े हो जाएगें। गोलाई के बीच में साधनसेवी या कोई एक प्रतिभागी रिंग–रिंग कहना शुरू करेंगे। ज्योंहि बीच वाले व्यक्ति रिंग–रिंग कहना शुरू करेंगे, गोलाई में खड़े प्रतिभागीगण गोलाई में ही दौड़ते रहेंगे और रिंग–रिंग बोलते रहेंगे। बीच में खड़े व्यक्ति भी गोलाई में दौड़ रहे प्रतिभागियों के साथ दौड़ते रहेंगे। बीच वाले व्यक्ति जैसे ही STOP कहेंगे वैसे ही सभी प्रतिभागी अपने स्थान पर कोई अभिनय करते हुए रूक जाएगें। अब बीच वाले व्यक्ति किसी भी प्रतिभागी के पास जाकर उन्हें हंसाने की कोशिश करेंगे। यदि वे हंसाने में सफल हो जाते हैं तो हंसने वाले व्यक्ति बीच में आ जाएंगे और पुनः यह खेल शुरू हो जाएगा। परन्तु यदि प्रतिभागी नहीं हंसते हैं तो बीच वाले व्यक्ति को फिर किसी दूसरे प्रततभागी हो हंसाने की कोशिश करना होगा। यदि तीन बार बीच वाले व्यक्ति हंसाने में सफल नही होते हैं तो उन्हें समूह द्वारा दिया गया दण्ड जैसे – नाचना, गाना इत्यादि मान्य होगा।

एक, दो, तीन, चार सर पर हाथ रख

सभी प्रतिभागी गोलाई में खड़े हो जाएगें। साधनसेवी बीच में खड़ा रहेंगे। साधन सेवी प्रतिभागियों को 1, 2, 3, 4 गिनती गिनने को कहेगें परन्तु इसमें शर्त लगा रहेगा कि''गिनने के क्रम 5, 10, 15, 20, 25, ... (जो संख्या 5 विभाजित होती है) उसे बोलना नहीं है और उसके स्थान पर अपने सर पे बांये या दांये हाथ को रखना है। यदि नम्बर की गिनती बांई ओर से आ रही हो और 5 नहीं बोलने वाले व्यक्ति अपने सर पर बांया हाथ रख देते हैं तो उनके दाहिने तरफ का व्यक्ति 6 बोलेगें और इस तरह गिनती आगे बढ़ता जाएगा परन्तु यदि 5 नहीं बोलने वाले व्यक्ति अपने सर पर दाहिना हाथ रख देते हैं तो नम्बर वापस हो जाएगा और उनके बगल का बाई ओर का व्यक्ति 1 उसके बगल का 2 और इस तरह नम्बर आगे बढ़ता जाएगा। जो व्यक्ति 5, 10, 15, 20, 25, ... बोल देगें या देरी से सर पर हाथ रखेंगे तो उन्हें OUT कर दिया जाएगा यानी बीच में बैठा दिया जाएगा।

मेरा दोस्त श्याम खो गया है

इस खेल को बैठकर ही खेलना है। पहले साधन सेवी अपने बगल वाले व्यक्ति से पूछेंगे कि ''मेरा दोस्त श्याम खो गया है, क्या आपने उसे देखा है?'' इसके उत्तर में बगल वाले व्यक्ति कहेंगे ''नहीं मैं बगल वाले से पूछ कर बताता हूं'' फिर वे बगल वाला व्यक्ति यानी जिससे साधन सेवी प्रश्न पूछे थे अब वो अपने बगल वाले व्यक्ति से पूछेंगे कि ''मेरा दोस्त श्याम........? यह क्रम एक–एक कर चलता रहेगा। अब साधन सेवी घोपणा करेंगे कि ''इसी प्रश्न को अब पुनः हम लोग बोलेंगे परन्तु शर्त यह है कि इस बार बोलते समय किसी का भी दांत नहीं दिखना है'' और इस तरह यह क्रेम चलता रहेगा।

नोट : यह खेल 15-20 प्रतिभागियों के बीच ही खेला जाए अन्यथा बहुत ज्यादा समय लग जाएगा।

परिशिष्ट – ३

प्रशिक्षण सामग्री

नोट बुक	प्रत्येक प्रतिभागी को पहले एक – एक तथा भर जाने के बाद दूसरी दी जाये।
पेन	प्रत्येक को एक–एक दी जाये।
पेन्सिल, रबर, शार्पनर	आवश्यतानुसार समूह कार्य हेतु
कागज रिम	3
स्केल	5
मोम रंग	5 डिब्बी
चार्ट पेपर	आवश्यकतानुसार
स्केच पेन	आवश्यकतानुसार
रीफिल	3 सेट
चाक	आवश्यकतानुसार
गोंद	आवश्यतानुसार
सेलोटेप	2 रोल मीडियम (आवश्यकतानुसार)
स्टेपलर	2
पंचिंग मशीन	1
कैंचियां	10
पेपर कटर	2
रंगीन कागज	आवश्यतानुसार
ज्ञान भारती कक्षा 1	5 प्रति
बाल अंक गणित कक्षा 1	5 प्रति
ज्ञान भारती कक्षा 2, 3, 4, 5	1 प्रति
ज्ञान भारती कक्षा 2, 3, 4, 5	1 प्रति